नेकियों का गुलदस्ता

साजिदा फ़रज़ाना सादिक़

अनुवादक

गुलज़ार सहराई

विषय सूची

* दो शब्द 5
* कुछ शब्दों के अर्थ 6
* इस्लाम में अच्छे अख़्लाक़ की अहमियत 7
* प्यारे नबी (सल्ल०) का प्यारा अख़्लाक़ 15
* हर काम : सिर्फ़ अल्लाह के लिए 22
* अल्लाह पर भरोसा 26
* सच्चाई की अहमियत 29
* ज़बान की हिफ़ाज़त 32
* नर्म मिज़ाजी 35
* नर्मी भलाइयों की कुंजी है 39
* शुक्र 41
* ख़ामोशी की अहमियत 45
* दूसरों का भला चाहना 48
* छिपा हुआ शिर्क 50
* बातचीत के आदाब 54
* सत्य पर मज़बूती से जमना 56
* विनम्रता 61
* सब्र और तक़वा 63
* इंसाफ़ 66
* मीठे बोल 70

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(अल्लाह के नाम से जो बेइन्तिहा मेहरबान बड़ा रहमवाला है।)

दो शब्द

इस्लाम का इतिहास इस बात का गवाह है कि दीन को क़ायम करने की गातार कोशिश और समाज सुधार के कामों में मर्दों के साथ-साथ औरतों ने ी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। इस्लामी तहरीक की कर्मठ-सदस्या मुहतरमा ाजिदा फ़रज़ाना सादिक़ भी उन्हीं भाग्यशाली औरतों में से हैं जो अपनी वभिन्न घरेलू व सामाजिक व्यस्तताओं में घिरी रहने के बावजूद न सिर्फ़ यह के तहरीक के उन कामों में भाग लेती हैं जो उनके सुपुर्द किए जाते हैं, ल्कि कुछ समय रचनात्मक कामों और दावत व तहरीक से सम्बन्धित लेख लेखने के लिए भी निकाल लेती हैं। उनके लेख और निबन्ध हम आए दिन त्र-पत्रिकाओं में पढ़ते रहते हैं। ख़ुदा ने उन्हें एक ऐसा दर्दमन्द दिल दिया ;, जो समाज के सुधार व निर्माण के लिए हमेशा प्रयासरत रहता है।

यह किताब 'नेकियों का गुलदस्ता' मुहतरमा साजिदा फ़रज़ाना सादिक़ क उन लेखों का संग्रह है जो वे समय-समय पर उर्दू मासिक 'ज़िक्रा, हिजाब,' 'बतूल,' और दूसरी पत्रिकाओं के लिए लिखती रही हैं और नमें प्रकाशित होकर वे पाठकों की दिलचस्पी और उनकी इस्लाह का ामान जुटाती रही हैं। उनके अधिकतर लेखों का आधार क़ुरआन की शिक्षाएँ, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की हदीसें और इस्लामी इतिहास की च्ची और मनमोहक घटनाएँ हैं।

हमें यक़ीन है कि हमारी तहरीकी बहन का यह लेखन-प्रयास पाठकों द्वारा क़द्र की निगाह से देखा जाएगा और इससे ज़्यादा से ज़्यादा लोग ाभान्वित होंगे।

—प्रकाशक

इस पुस्तक में प्रयुक्त कुछ पारिभाषिक शब्दों व संकेतों के अर्थ

सल्ल०— पूर्ण अरबी वाक्य 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम०' अर्थात "हज़रत मुहम्मद पर अल्लाह की ओर से उपकार व सलामती हो।" दुआ के ये शब्द हज़रत मुहम्मद का नाम लिखते, बोलते या सुनते समय लिखे या बोले जाते हैं।

रज़ि०— पूर्ण अरबी वाक्य 'रज़ियल्लाहु अन्हु' अर्थात "अल्लाह उनसे राज़ी हो"। दुआ के ये शब्द हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के साथियों के लिए लिखे या कहे जाते हैं। स्त्री के लिए 'अन्हु' की जगह पर 'अन्हा' पुरुष-बहुवचन के लिए 'अन्हुम' और स्त्री-बहुवचन के लिए 'अन्हुमा'

सहाबी— हर उस मुस्लिम व्यक्ति को कहा जाता है जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का साथी रहा हो, या कम से कम आप (सल्ल०) को देखा हो। स्त्री के लिए शब्द 'सहाबिय:'। पुरुष-बहुवचन के लिए 'सहाबा', स्त्री-बहुवचन के लिए 'सहाबियात'

अलै०— पूर्ण अरबी वाक्य 'अलैहिस्सलाम'। अर्थात "उन पर अल्लाह की (ओर से) सलामती हो।" हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पहले के सारे रसूलों, नबियों, और फ़रिश्तों का नाम लिखते, बोलते समय यह दुआ लिखी या बोली जाती है।

हिजरत— सन्मार्ग में, सत्यधर्म की सेवा में, परिस्थिति माँग करे तो अपना निवास स्थान या बस्ती, नगर, देश छोड़कर दूसरे किसी स्थान या नगर को चले जाना।

दीन— अरबी शब्द। जीवन व्यवस्था, जीवन पद्धति, जीवन प्रणाली, धर्म।

इस्लाम में अच्छे अख़्लाक़ की अहमियत

इस्लाम में अच्छे अख़्लाक़ का स्थान बहुत ऊँचा है। प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ईमान के बाद जिन चीज़ों पर ज़्यादा ज़ोर दिया है और जिन पर इंसान की कामयाबी व ख़ुशनसीबी का दारोमदार ठहराया है उनमें एक यह भी है कि इंसान अच्छे अख़्लाक़ अपनाए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के दुनिया में भेजे जाने के जिन उद्देश्यों का क़ुरआन मजीद में ज़िक्र किया गया है उनमें एक उद्देश्य यह भी है कि आप (सल्ल०) को लोगों का तज़किया (चरित्र-निर्माण) करना है। क़ुरआन मजीद में "व युज़क्कीहिम" (और वह यही नबी उनका तज़किया करता है) का शब्द आया है। इस तज़किए में अख़्लाक़ी इस्लाह और सुधार की ख़ास अहमियत है।

प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुझे अल्लाह की तरफ़ से इसलिए भेजा गया है कि मैं अख़्लाक़ी अच्छाइयों को उनकी इन्तिहा तक पहुँचाऊँ।"

(हदीस : मुवत्ता इमाम मालिक)

नबी (सल्ल०) की नुबूवत का मक़सद यह है कि आप (सल्ल०) लोगों के अख़्लाक़ और आपसी व्यवहार को दुरुस्त करें। उनके अन्दर से बुरे अख़्लाक़ की जड़ें उखाड़ फेंकें और उनकी जगह बेहतर अख़्लाक़ पैदा करें। अस्ल में यही आप (सल्ल०) के दुनिया में आने का मक़सद है।

प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "सबसे वज़नी चीज़ जो ईमानवाले के पलड़े में रखी जाएगी, वह उसका अच्छा अख़्लाक़ (शिष्टाचार) होगा। और अल्लाह उस व्यक्ति को बहुत ही नापसन्द करता है जो बे-शर्मी और बदज़बानी करता है।" (हदीस : तिरमिज़ी)

"ख़ुल्क़े हसन" (शिष्टाचार) की व्याख्या करते हुए हज़रत अब्दुल्लाह

बिन मुबारक ने कहा है, "अच्छा अख़्लाक़ यह है कि आदमी जब किसी से मिले तो हँसते हुए चेहरे से मिले और अल्लाह के मुहताज बन्दों पर माल ख़र्च करे और किसी को तकलीफ़ न दे।"

अच्छा व्यवहार दुनिया की ज़िन्दगी में भी ख़ुदा की सबसे बड़ी नेमत है और आख़िरत में भी इंसान की अस्ल क़द्र व क़ीमत उसके किरदार व चरित्र की महानता के ही आधार पर होगी।

क़बीला मुज़ैना के एक आदमी का बयान है कि कुछ सहाबा किराम (रज़ि०) ने प्यारे नबी (सल्ल०) से पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! इंसान को जो कुछ दिया गया है उसमें सबसे बेहतर क्या है?" प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अच्छे अख़्लाक़।" (हदीस : बैहक़ी)

दूसरी हदीस में नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुममें सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनके अख़्लाक़ अच्छे हैं।" (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

एक और हदीस में नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ईमानवालों में ज़्यादा मुकम्मल ईमानवाले वे लोग हैं जो अख़्लाक़ में ज़्यादा अच्छे हैं।" (हदीस : अबू दाऊद)

मतलब यह है कि ईमान और अख़्लाक़ में ऐसा सम्बन्ध है कि जिसका ईमान मुकम्मल (पूर्ण) होगा, उसके अख़्लाक़ निश्चय ही अच्छे होंगे। और जिसके अख़्लाक़ अच्छे होंगे, उसका ईमान भी मुकम्मल होगा।

अल्लाह तआला उन लोगों को पसन्द करता है जो अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं। क़ुरआन मजीद में नेक और परहेज़गार लोगों की अख़्लाक़ी ख़ूबियाँ बयान की गई हैं। क़ुरआन मजीद में एक जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"निश्चय ही सफलता पाई है ईमानवालों ने, जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ़ (विनम्रता) अपनाते हैं, बेकार की बातों से दूर रहते हैं, ज़कात अदा करते हैं, अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफ़ाज़त करते हैं सिवाय अपनी बीवियों के और उन औरतों के जो उनके

अधिकार में हों (अर्थात् लौंडियाँ), कि इस पर वे निन्दनीय नहीं हैं। अलबत्ता जो इसके अलावा कुछ और चाहें, वही ज़्यादती करनेवाले हैं। अपनी अमानतों और अपने वचनों और वादों का ध्यान रखते हैं, और अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं, यही लोग वे वारिस हैं जो विरासत में फ़िरदौस (जन्नत) पाएँगे। और उसमें हमेशा रहेंगे।'' (क़ुरआन, 23:1-11)

इसी प्रकार एक दूसरी जगह अल्लाह तआला ने ईमानवालों के ये अख़्लाक़ बयान किए हैं—

''रहमान के (अस्ली) बन्दे वे हैं जो धरती पर नर्म चाल चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं 'तुमको सलाम।' जो अपने पालनहार के आगे सजदे में और खड़े रातें गुज़ारते हैं, जो दुआएँ करते हैं कि 'ऐ हमारे रब! जहन्नम के अज़ाब से हमको बचा ले, उसका अज़ाब तो जान का लागू है, वह तो ठहरने की बड़ी ही बुरी जगह और बड़ा ही बुरा ठिकाना है।' जो ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं न कंजूसी, बल्कि उनका ख़र्च दोनों इन्तिहाओं के बीच सन्तुलन पर क़ायम रहता है, जो अल्लाह के सिवा किसी और माबूद (इष्ट पूज्य) को नहीं पुकारते, अल्लाह की हराम की हुई किसी जान को नाहक़ हलाक नहीं करते और न व्यभिचार करते हैं— यह (वर्जित) काम जो कोई करे वह अपने गुनाह का बदला पाएगा। क़ियामत के दिन उसको निरन्तर अज़ाब दिया जाएगा और उसी में वह हमेशा अपमान के साथ पड़ा रहेगा। मगर सिवा इसके कि (वह इन गुनाहों के बाद) तौबा कर चुका हो और ईमान लाकर अच्छे काम करने लगा हो। ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा और वह बड़ा माफ़ करनेवाला और दया करनेवाला है। जो व्यक्ति तौबा करके अच्छे काम करता है वह

तो अल्लाह की ओर पलट आता है, जैसा कि पलटने का हक़ है—(और रहमान के बन्दे वे हैं) जो झूठ के गवाह नहीं बनते और किसी व्यर्थ चीज़ पर उनका गुज़र हो जाए तो शरीफ़ आदमियों की तरह गुज़र जाते हैं। जिन्हें अगर उनके रब की आयतें सुनाकर नसीहत की जाती है तो वे उसपर अन्धे और बहरे बनकर नहीं रह जाते। जो दुआएँ माँगा करते हैं कि 'ऐ हमारे पालनहार ! हमे हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठण्डक दे और हमको परहेज़गारों का पेशवा (अगुवाई करनेवाला) बना!' ये हैं वे लोग जो अपने सब्र का फल (स्वर्ग में) ऊँचे भवन के रूप में पाएँगे। ज़िन्दाबाद और सलाम से उनका स्वागत होगा। वे हमेशा-हमेशा वहाँ रहेंगे। क्या ही अच्छा है वह ठिकाना और वह ठहरने की जगह।"

(क़ुरआन, 25:63-76)

ये शिक्षाएँ बताती हैं कि इस्लाम इसलिए आया था कि लोगों की ज़िन्दगी को नेकियों और आदाब की रौशनी से जगमग कर दे, उनके अन्दर ऊँचे चरित्र की चमक पैदा कर दे और अख़्लाक़ के मोतियों से उनका दामन भर दे। अल्लाह और रसूल (सल्ल०) के प्यारे वही लोग हैं जो अच्छे अख़्लाक़ और चरित्रवाले हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) से रिवायत है, वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को यह फ़रमाते सुना, "क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि मेरे नज़दीक तुममें सबसे ज़्यादा प्यारा कौन है? और क़ियामत के दिन मुझसे सबसे ज़्यादा क़रीब कौन होगा?" आप (सल्ल०) ने दो या तीन बार यह सवाल दोहराया। लोगों ने कहा, "ज़रूर बताइए ऐ अल्लाह के रसूल!" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो तुममें से सबसे ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाला होगा।" (हदीस : अहमद)

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०)

ने फ़रमाया, "बन्दा अपने अच्छे आचरण के द्वारा आख़िरत के बड़े दर्जे और उसके ऊँचे रुतबे पा लेता है चाहे वह इबादत में कमज़ोर हो। लेकिन अपने बुरे आचरण के कारण जहन्नम के सबसे निचले हिस्से में फेंक दिया जाता है।" (हदीस : तबरानी)

हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है, वे कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को फ़रमाते सुना, "ईमानवाला अपने अच्छे अख़्लाक़ के बल पर रोज़ा रखनेवाले और नमाज़ पढ़नेवाले के दर्जे को पहुँच जाता है।" एक और रिवायत में है कि "ईमानवाला अपने अच्छे अख़्लाक़ के ज़रिए रातों को (नमाज़ में) खड़े होनेवाले और दिनों में रोज़ा रखनेवाले के दर्जे हासिल कर लेता है।" (हदीस : अबू दाऊद)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को फ़रमाते सुना, "इबादत में सन्तुलन रखनेवाला मुसलमान अपने अच्छे अख़्लाक़ और शराफ़त के आधार पर उस व्यक्ति के दर्जे को पा लेता है जो रोज़ा रखता हो और रातों को नमाज़ में अल्लाह की आयतों की तिलावत (पाठ) करता हो।" (हदीस : अहमद)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने नबी (सल्ल०) से रिवायत की है कि "मोमिन की शराफ़त उसकी दीनदारी है, उसकी रवादारी उसकी अक़्ल है और उसकी मुहब्बत उसका अच्छा अख़्लाक़ है।" (हदीस : हाकिम)

उन ही से एक हदीस हज़रत अबू ज़र (रज़ि०) ने बयान की है कि "सफल हो गया वह व्यक्ति जिसने अपने दिल को ईमान के लिए ख़ालिस (विशुद्ध) कर लिया, अपने दिल को साफ़-सुथरा रखा, उसकी ज़बान सच्ची रही, उसका मन सन्तुष्ट रहा और उसकी फ़ितरत (प्रकृति) सीधे रास्ते पर रही।" (हदीस : इब्ने-हिब्बान)

इस्लाम में अख़्लाक़ व शिष्टाचार की कितनी अहमियत है इसका अनुमान इस हदीस से भी लगाया जा सकता है—

इमाम अहमद (रह०) की रिवायत है कि एक व्यक्ति ने नबी (सल्ल०) से कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! दो औरतें हैं, जिनमें से एक रात भर नमाज़ें पढ़ा करती है, दिन में रोज़े रखती है, सदक़ा भी करती है, मगर ज़बान की

तेज़ है और सारे मुहल्लेवाले उससे पनाह माँगते हैं।'' आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''उसमें कोई नेकी नहीं, वह दोज़ख़ में जानेवाली है।''

उस व्यक्ति ने दूसरी औरत का हाल बयान किया और कहा कि ''वह सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ लेती है और थोड़ा-बहुत सदक़ा लोगों को देती है, मगर किसी को सताती नहीं और पड़ोसियों से बेहतर सुलूक करती है और बेहद ख़ुशअख़्लाक़ है। लोग उसकी ओर झुके पड़ते हैं।'' आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''वह जन्नत में जाएगी!'' (हदीस : अहमद)

प्यारे नबी (सल्ल०) अच्छे अख़्लाक़ का नमूना थे। अल्लाह तआला ने आपके अख़्लाक़ व शिष्टाचार की प्रशंसा करते हुए फ़रमाया—

''(ऐ मुहम्मद!) निस्सन्देह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो।'' (क़ुरआन, 68 : 4)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने साथियों के बीच जिस अच्छे अख़्लाक़ व आचरण की दावत देते थे उसका बेहतरीन नमूना आप (सल्ल०) ख़ुद थे। आप (सल्ल०) दूसरों को आदेश और नसीहत करने से पहले अपनी अच्छी और नेक ज़िन्दगी के द्वारा उनके अन्दर उस ऊँचे अख़्लाक़ (आचरण) का बीजारोपण करते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) कहते हैं, ''अल्लाह के रसूल (सल्ल०) न बुरा व्यवहार करते थे, न बुरी बात बोलते थे। आप (सल्ल०) फ़रमाया करते, ''अल्लाह तआला नर्मदिल है, वह नर्मदिली को पसन्द करता है और नर्मदिली का जो बदला देता है वह सख़्ती के बदले नहीं देता। बल्कि उतना बदला किसी भी चीज़ के बदले नहीं देता।'

(हदीस : मुस्लिम)

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं, ''मैंने प्यारे नबी (सल्ल०) की दस साल तक सेवा की। ख़ुदा की क़सम! आपने कभी मुझे 'उफ़' न कहा और न किसी चीज़ के बारे में पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया? और ऐसा क्यों न किया?'' (हदीस : मुस्लिम)

हज़रत अनस (रज़ि०) ही से रिवायत है कि जब कोई आदमी नबी (सल्ल०) के सामने आता और आपसे हाथ मिलाता तो आप (सल्ल०) अपना हाथ उसके हाथ से अलग न करते जब तक कि वह ख़ुद ही अपना हाथ न खींच लेता और न अपने चेहरे का रुख़ उसके चेहरे से हटाते यहाँ तक कि वह ख़ुद हटा लेता और महफ़िलों में कभी आपको अपने साथ बैठनेवाले से आगे घुटने बढ़ाकर बैठते हुए न देखा गया।" (हदीस : तिरमिज़ी)

हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि "अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जब भी दो बातों में से किसी एक को चुनने का अधिकार देते तो आप ख़ुद उनमें से आसान बात को अपनाते, इस शर्त के साथ कि उसमें कोई गुनाह न हो। अगर वह काम गुनाह का कारण होता तो आप (सल्ल०) सबसे ज़्यादा उससे दूर भागते। प्यारे नबी (सल्ल०) ने कभी किसी से अपने निजी स्वार्थवश इन्तिक़ाम और प्रतिशोध न लिया। हाँ, अगर अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन किया जाता तो उस समय आप (सल्ल०) को क्रोध आ जाता। आप (सल्ल०) ने कभी किसी को अपने हाथ से न मारा— न बीवी को न नौकर को— हाँ आप (सल्ल०) अल्लाह के रास्ते में जिहाद अवश्य करते थे।" (हदीस : मुस्लिम)

प्यारे नबी (सल्ल०) बड़े सख़ी (दानशील) थे, किसी चीज़ में कंजूसी न करते थे। बड़े बहादुर व साहसी भी थे। आपने सत्य से कभी मुँह न मोड़ा, इंसाफ़-पसन्द थे, आपने अपने फ़ैसलों में कभी ज़्यादती न की। आपने अपनी पूरी ज़िन्दगी सच्चाई और ईमानदारी में गुज़ारी।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत है कि "अल्लाह के नबी (सल्ल०) से जब भी माँगा गया, आपने 'नहीं' कभी न कहा।"

हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने वह्य नाज़िल होने की शुरूआत में आप (सल्ल०) से कहा था, "आप कमज़ोरों का बोझ ढोते हैं, निर्धनों के लिए कमाई करते हैं और हक़ पर आनेवाली मुसीबत में उसका साथ देते हैं।..."

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "मैंने अल्लाह

के रसूल (सल्ल०) से ज़्यादा मुसकराते हुए किसी को नहीं देखा।''

(हदीस : तिरमिज़ी)

प्यारे नबी (सल्ल०) अपने साथियों से मुहब्बत करते थे। हर क़ौम के शरीफ़ और इज़्ज़तदार व्यक्ति का एहतिराम करते थे और उसे उस क़ौम के लोगों का ज़िम्मेदार बना देते थे। आप (सल्ल०) अपने साथियों की फ़िक्र में रहते और हर साथी को उसका हिस्सा देते। कोई साथी यह नहीं समझ सकता था कि उससे बढ़कर भी आपकी निगाह में कोई प्रतिष्ठित हो सकता है।

नबी (सल्ल०) ख़ूबसूरत, अच्छे स्वभाववाले, नर्ममिज़ाज और नर्मदिल थे। तंगदिल और सख़्तदिल न थे। लड़ाई-झगड़ा करना आप (सल्ल०) की आदत न थी, बुरे शब्द बोलना भी आपका स्वभाव न था। दूसरों को बुरा-भला कहना या ज़रूरत से ज़्यादा प्रशंसा करना भी आप (सल्ल०) के स्वभाव से परे था। बेज़रूरत चीज़ों से लापरवाही दिखाते लेकिन निराश कभी न होते।

हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ का मालिक और कोई न था। जब भी आपके दोस्त या घर के लोग आपको आवाज़ देते, आप तुरन्त पहुँच जाते।

आप (सल्ल०) अपने सहाबा (रज़ि०) से हँसी-मज़ाक़ करते, उनके साथ मिल-जुलकर रहते और उनसे क़रीब रहने की कोशिश करते। उनके बच्चों से खेल-कूद करते और उन्हें अपनी गोद में बिठाते।

नबी (सल्ल०) स्वभावत: ख़ामोश रहनेवाले थे। बिना ज़रूरत के बात नहीं करते थे और जो कोई ठीक से बात न करता उससे बचते और उससे दिलचस्पी न रखते थे।

प्यारे नबी (सल्ल०) का अख़्लाक़

प्यारे नबी (सल्ल०) अच्छे अख़्लाक़ का बेहतरीन नमूना थे। किसी ने एक बार उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि०) से पूछा, "प्यारे नबी का अख़्लाक़ (आचरण) कैसा था?" हज़रत आइशा (रज़ि०) ने फ़रमाया, "क्या तुमने क़ुरआन नहीं पढ़ा है? जो कुछ क़ुरआन में है वह नबी (सल्ल०) का अख़्लाक़ है।"

वास्तविकता यह है कि नबी (सल्ल०) की पूरी ज़िन्दगी क़ुरआन मजीद की व्यावहारिक व्याख्या थी। ख़ुद क़ुरआन मजीद ने आप (सल्ल०)के अख़्लाक़ के बारे में गवाही देते हुए कहा है-

"निस्सन्देह (ऐ मुहम्मद) तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो।" (क़ुरआन, 68 : 4)

प्यारे नबी (सल्ल०) बचपन ही से बड़े नेक, विनम्र, मिलनसार, मेहरबान और रहमदिल थे। बड़े ख़ुशमिज़ाज और हँसमुख भी थे। सब छोटों-बड़ों से मुहब्बत करते। किसी को बुरे नाम से याद न करते, कभी किसी का दिल न दुखाते। किसी की पीठ-पीछे उसकी बुराई न करते। हमेशा सच बोलते, ग़रीबों का ध्यान रखते, बीमारों की देखभाल करते और हर एक के साथ अच्छे अख़्लाक़ से पेश आते थे। आप (सल्ल०) ने किसी को न मारा और न किसी को कभी गाली दी। आप (सल्ल०) अत्यन्त दानशील और खुले हाथोंवाले थे। जहाँ तक हो सकता हर माँगनेवाले की मदद करते। कभी किसी को ख़ाली हाथ वापस नहीं करते, यहाँ तक कि ख़ुद भूखे रहकर दूसरों को खिलाते थे।

एक बार एक सहाबी की शादी हुई। उनके पास वलीमा (शादी के बाद दूल्हा की ओर से दिए जानेवाले भोज) का कुछ सामान न था। नबी (सल्ल०) ने उनसे फ़रमाया, "आइशा के पास जाओ और उनसे आटे की टोकरी माँग लाओ।" हालाँकि उस आटे के सिवा शाम के लिए घर में कुछ न था।

एक बार फ़िदक नामक स्थान के एक धनवान ने नबी (सल्ल०) की सेवा में चार ऊँट अनाज भेजा। उसको बेचकर पहले तो आप (सल्ल०) ने क़र्ज़ अदा किया। फिर कुछ अनाज बच गया तो इरशाद फ़रमाया, "जब तक इसमें से कुछ भी रहेगा मैं घर नहीं जा सकता।" अतः आप (सल्ल०) ने रात मस्जिदे-नबवी में बिताई। दूसरे दिन मालूम हुआ कि वह अनाज बँट चुका है, तब आप (सल्ल०) घर तशरीफ़ ले गए। आप (सल्ल०) दोषियों को माफ़ भी करते और दुश्मनों के लिए भलाई की दुआ करते थे।

इस्लामी विद्वान मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी (रह०) ने लिखा है, "नबी (सल्ल०) का उठना, बैठना, रहना-सहना और मेल-जोल सब कुछ अरबवालों के साथ था, लेकिन आप (सल्ल०) की आदतें और अख़्लाक़ व ख़यालात सबसे अलग थे। बातचीत में झूठ का ज़रा सा अंश तक न था। अपने हाथ या ज़बान से किसी को ज़र्रा-भर भी तकलीफ़ न पहुँचाई। ज़बान में सख़्ती के बजाए मिठास थी। जो भी एक बार आप (सल्ल०) की महफ़िल में शरीक होता, आपका प्रशंसक हो जाता। अमानतदारी, सच्चाई और साफ़ तबीअत का हाल यह था कि लोग अपना माल और सामान आप (सल्ल०) के पास हिफ़ाज़त के लिए रखवाते थे। आप (सल्ल०) उनकी ऐसी हिफ़ाज़त करते जैसे ख़ुद अपनी और अपने माल की की जाती है। सारी क़ौम आप (सल्ल०) की ईमानदारी पर भरोसा करती और आप (सल्ल०) को 'अमीन' के नाम से पुकारती थी।

शर्मो-हया का यह हाल था कि होश संभालने के बाद किसी ने आप (सल्ल०) को निर्वस्त्र नहीं देखा। शालीनता का हाल यह कि बदतमीज़ों और गन्दे लोगों से आए दिन वास्ता पड़ने के बावजूद कभी असभ्य या अशिष्ट बात न की। आप (सल्ल०) के हर काम में सफ़ाई और सुथराई थी। अपनी क़ौम को लूट-मार और रक्तपात करते देखकर आप बेचैन और परेशान रहते थे। लड़ाई-झगड़ों के अवसरों पर सुलह-सफ़ाई कराने की कोशिश करते। दिल ऐसा नर्म था कि हर किसी के दुख में शरीक रहते थे। अनाथों और विधवाओं की मदद करते, भूखों को खाना खिलाते और मुसाफ़िरों के साथ सहयोग और आथित्य-सत्कार (मेज़बानी) का बर्ताव करते। किसी

को कभी आप (सल्ल०) से दुख नहीं पहुँचा। अक़्ल ऐसी साफ़-सुथरी और सीधी कि बुतपरस्तों की क़ौम में रहकर भी बुतों से नफ़रत करते थे। आप (सल्ल०) ने ख़ुदा के सिवा कभी किसी इंसान के आगे सिर नहीं झुकाया। आपके अन्दर से खुद-बख़ुद आवाज़ आती थी कि ज़मीन व आसमान में जितनी चीजें दिखाई पड़ती हैं, उनमें से कोई पूजे जाने के योग्य नहीं है। आपका दिल गवाही देता कि ख़ुदा एक ही हो सकता है और एक ही है। उस जाहिल क़ौम में आप (सल्ल०) ऐसे विशिष्ट और अलग दिखाई पड़ते थे मानो पत्थरों के ढेर में हीरा चमक रहा है या घटाटोप अंधेरे में एक दीप जल रहा है।

बेहतर और नेक तरबियत की आशा किसी ऐसे ही व्यक्ति से की जा सकती है, जिसके व्यक्तित्व की ओर निगाहें उठें तो उसके अच्छे व्यवहार से चका-चौंध हो जाएँ। उसकी शराफ़त के गुण गाए जाने लगें और ख़ुश होकर उसकी ज़िन्दगी से फ़ायदा उठाने की तड़प दिलों में पैदा हो जाए और उसके पदचिह्नों पर चलने का जज़्बा आम हो जाए। बल्कि अनुयायियों और अधीनस्थों के अन्दर ज़्यादा से ज़्यादा अच्छे आचरण के फलने-फूलने के लिए ज़रूरी है कि रहनुमा (Leader) के अन्दर उनसे कहीं ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ और ख़ूबियाँ पाई जाएँ। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने साथियों को जिस अख़्लाक़ व आचरण की ओर बुलाते थे, आप (सल्ल०) ख़ुद उसका सबसे बेहतरीन नमूना थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) फ़रमाया करते थे, "तुममें बेहतर वे लोग हैं जो अपने अख़्लाक़ में सबसे अच्छे हों।" (हदीस : बुख़ारी)

आप (सल्ल०) का नियम था कि रास्ते में मिलनेवालों को सलाम करते थे और सलाम करने में पहल करते थे। किसी को कोई सन्देश भिजवाते तो साथ में सलाम ज़रूर कहलवाते। एक बार लड़कों की एक टोली के पास से गुज़रे तो उनको सलाम किया, औरतों की जमाअत के क़रीब से गुज़रे तो उनको सलाम किया। दोस्तों से मिलते तो हाथ भी मिलाते और गले भी लगाते। किसी से मिलने जाते तो दरवाज़े के दाएँ या बाएँ खड़े

होकर अपने आने की ख़बर भिजवाते और इजाज़त लेने के लिए तीन बार सलाम करते। अगर अन्दर से जवाब नहीं मिलता तो ग़ुस्सा और मलिन हुए बिना वापस आ जाते। आपके शरीर या वस्त्र से कोई व्यक्ति मिट्टी आदि साफ़ कर देता तो शुक्रिया अदा करते हुए फ़रमाते, "ख़ुदा तुमसे हर उस चीज़ को दूर कर दे जो तुम्हें बुरी लगे।" भेंट और उपहार स्वीकार करते और बदले में ख़ुद भी कुछ भेंट अवश्य देते। बुरे व्यवहार का बदला बुरे व्यवहार से न देते बल्कि माफ़ और नज़रअंदाज़ कर देते। बीमारों का हाल पूछने के लिए ख़ासतौर पर उनके पास जाया करते थे। आपने फ़रमाया, "इयादत (बीमार का हाल पूछना) मुसलमानों के लिए सर्वसम्मत फ़र्ज़ है।" आप (सल्ल०) बीमारों को तसल्ली देते, उनकी सेहत के लिए दुआ करते। रोगी का हाल पूछने में आप (सल्ल०) मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम में कोई भेद न करते।

मेल-जोल की ज़िन्दगी में नबी (सल्ल०) के अच्छे किरदार की तस्वीर हज़रत अनस (रज़ि०) ने ख़ूब खींची है। वे फ़रमाते हैं- "मैं दस वर्ष तक नबी (सल्ल०) की सेवा में रहा और आप (सल्ल०) ने कभी 'उफ़' भी नहीं कहा। मैंने कोई काम जैसा भी किया, आप (सल्ल०) ने यह नहीं कहा कि ऐसे क्यों नहीं किया। यही व्यवहार आपका अपने सेवकों के साथ भी रहा। आप (सल्ल०) ने किसी को कभी नहीं मारा।" इस बात की पुष्टि हज़रत आइशा (रज़ि०) करती हैं कि "बीवियों या सेवकों में से न कभी किसी को मारा, न किसी से निजी स्वार्थवश इन्तिक़ाम लिया। सिवाय इसके कि आप (सल्ल०) ख़ुदा के रास्ते में जिहाद करें या अल्लाह के कानून के तहत उसकी क़ायम की हुई हिकमतों (तत्त्वदर्शिताओं) की रक्षा के लिए कार्यवाही करें।" लोगों ने हज़रत आइशा (रज़ि०) से पूछा कि "नबी (सल्ल०) जब घर में होते थे तो आप (सल्ल०) का मिज़ाज कैसा रहता था?" हज़रत आइशा (रज़ि०) ने जवाब में फ़रमाया, "सबसे ज़्यादा नर्म मिज़ाज, होठों पर मुस्कराहट, और चेहरा खिला हुआ। आपकी शान यह थी कि कभी किसी सेवक को झिड़का भी नहीं।"

प्यारे नबी (सल्ल०) बड़े मेहमाननवाज़ थे। आपके यहाँ मुस्लिम और

ग़ैर मुस्लिम सब ही मेहमान होते थे। आप (सल्ल०) बिना किसी भेदभाव के सबकी ख़ातिरदारी और सेवा करते थे। कभी ऐसा भी होता कि मेहमान आ जाते और घर में जो कुछ मौजूद होता, वह उनको खिला दिया जाता और सारा घर भूखा रहता। आप (सल्ल०) रातों को उठ-उठकर मेहमानों की देखभाल करते थे। घर में रहते तो घर के काम-काज में हाथ बँटाते। अपने लिबास और जूतों की मरम्मत ख़ुद ही कर लेते थे। बकरियों का दूध अपने हाथों से दूहते और अपनी ज़रूरतें ख़ुद ही पूरी कर लेते। महफ़िल में बैठते तो सबके बराबर होकर बैठते। मस्जिदे-नबवी के निर्माण के समय आप (सल्ल०) ने आम लोगों के साथ मिलकर मेहनत-मशक़्क़त का काम किया। ख़न्दक़ की लड़ाई (ग़ज़व-ए-ख़न्दक़) में शहर मदीना की रक्षा के लिए जो एक काफ़ी लम्बी चौड़ी और गहरी खाई तैयार की गई उसे खोदते समय आप (सल्ल०) सबके साथ मिलकर खुदाई करते थे। इसी मौक़े पर सहाबा (रज़ि०) ने भूख के मारे अपने पेटों पर पत्थर बाँध रखे थे। जब भूख की यह हालत बरदाश्त से बाहर हुई तो उन्होंने प्यारे नबी (सल्ल०) को अपना दामन उठाकर दिखाया। नबी (सल्ल०) ने देखा कि हर सहाबी (रज़ि०) ने अपने पेट पर पत्थर बाँधा हुआ है। यह देखकर प्यारे नबी (सल्ल०) ने अपना दामन उठाकर सहाबा (रज़ि०) को दिखाया। प्यारे नबी (सल्ल०) ने पेट पर एक के बजाय दो पत्थर बाँधे हुए थे, जिसका मतलब यह था कि भूख की वजह से आपकी हालत और भी ज़्यादा ख़राब थी। प्यारे सहाबा (रज़ि०) ने जब देखा कि हमारे सरदार अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) हमसे भी ज़्यादा मशक़्क़त उठा रहे हैं तो उन्हें अपनी परेशानी पर सब्र आ गया।

नबी (सल्ल०) क़ुसूरवारों को माफ़ कर देते थे। दुश्मनों के लिए भलाई की दुआ करते। ताइफ़ नगरवाले विधर्मियों ने जब आप (सल्ल०) पर पत्थर बरसाए तो आप (सल्ल०) ख़ून में लथ-पथ हो गए। अल्लाह तआला ने उसी समय जिबरील नामक एक फ़रिश्ते को आपके पास भेजा। हज़रत जिबरील (अलै०) ने फ़रमाया, "ऐ अल्लाह के रसूल! अगर आप ताइफ़वालों के लिए बददुआ करें तो अल्लाह तआला ज़रा देर में दोनों पहाड़ों को

मिलाकर ताइफ़वालों को नष्ट-विनष्ट कर देगा जैसा कि पिछली क़ौमों को किया।'' यह सुनकर प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''नहीं, मैं दुनिया में उन्हें सीधे रास्ते पर लाने के लिए भेजा गया हूँ, उन्हें नष्ट-विनष्ट करने के लिए नहीं।''

इसी लिए क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने नबी (सल्ल०) को ''रहमतुल-लिल-आलमीन'' (सम्पूर्ण जगत् के लिए साक्षात दयालुता) के उपनाम से याद किया है—

''(ऐ मुहम्मद!) हमने आपको सारी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा है।'' (क़ुरआन 21 : 107)

प्यारे नबी (सल्ल०) अत्यन्त साधारण जीवन जीते थे। आपके मिज़ाज में सादगी का यह हाल था कि खाने, पहनने-ओढ़ने की चीज़ों में आप (सल्ल०) को तकल्लुफ़ पसन्द न था। आपको जो खाने के लिए मिल जाता, खा लेते, जो पहनने के लिए मिलता वह पहन लेते। आप (सल्ल०) कभी बहुत अच्छे खाने या बहुत अच्छे लिबास की ख़ाहिश न करते। बल्कि अकसर जौ की रोटी, या खजूर या सिर्फ़ सत्तू पर गुज़ारा कर लिया करते।[1]

एक बार प्यारे नबी (सल्ल०) अपने साथियों के साथ सफ़र में थे। खाने का समय आया तो लोगों ने बकरी ज़ब्ह करके पकाने का इरादा किया। एक सहाबी ने कहा, ''मैं ज़ब्ह करूँगा,'' दूसरे ने कहा, ''मैं खाल उतारकर साफ़ करूँगा,'' तीसरे ने कहा, ''मैं पकाऊँगा,'' और ख़ुद प्यारे नबी (सल्ल०) ने कहा, ''मैं लकड़ियां इकट्ठा करूँगा।'' सहाबा किराम (रज़ि०) ने कहा, ''हम लोग सब काम के लिए हाज़िर हैं।'' आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''यह मैं जानता हूँ। मगर मुझे यह पसन्द नहीं कि मुझमें और तुममें किसी प्रकार का अन्तर हो। अल्लाह तआला इसको पसन्द नहीं करता कि उसका कोई बन्दा अपने साथियों से अलग रहे।''

---

1. नबी ने संतुलित नीति अपनाने की शिक्षा भी दी है और संतुलन आपको पसन्द था। अतः आप (सल्ल०) कभी-कभी अच्छा भोजन भी करते और अच्छे कपड़े भी पहनते थे। इस्लाम एक संतुलित धर्म (जीवन-प्रणाली) है। इसमें इन्तिहापसन्दी (Extrmism) नहीं है। —प्रकाशक

प्यारे नबी (सल्ल०) की इबादत का यह हाल था कि आप (सल्ल०) हर पल इबादत में ही गुम रहते। उठते-बैठते, चलते-फिरते, ग़रज़ हर वक़्त अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी हासिल करने की फ़िक्र और कोशिश रहती। हर हालत में दिल में और ज़बान से अल्लाह की याद जारी रहती। सहाबा किराम (रज़ि०) की महफ़िलों में या अपनी बीवियों के कमरों में होते और अज़ान की आवाज़ आ जाती तो आप (सल्ल०) उठ खड़े होते और मसजिद की ओर चल पड़ते। रात का बहुत बड़ा भाग ख़ुदा की इबादत में गुज़ारते थे। उम्र भर यह नियम रहा कि रात के दूसरे पहर के आरम्भ में नींद से उठकर मिस्वाक (दातुन) और वुज़ू करने के बाद तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते। क़ुरआन ठहर-ठहर कर पढ़ते। कभी-कभी नमाज़ में इतनी देर खड़े रहते कि आपकी पिंडलियों में सूजन आ जाती। इतनी मेहनत पर सहाबा किराम (रज़ि०) ने अर्ज़ किया, "अल्लाह तआला ने तो पहले ही आपकी मग़फ़िरत कर दी है, फिर इतनी ज़्यादा आप अपनी जान क्यों घुलाते हैं?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्या मैं ख़ुदा का एहसानमन्द और शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ?"

प्यारे नबी (सल्ल०) की सारी ज़िन्दगी क़ियामत तक के इंसानों के लिए बेहतरीन नमूना है। हम सभी को चाहिए कि प्यारे नबी (सल्ल०) की मुबारक ज़िन्दगी को 'मार्गदीप' ठहरा कर अपनी ज़िन्दगी को प्यारे नबी (सल्ल०) के चरित्र व आचरण के अनुसार ढालने की कोशिश करें। इस प्रकार हमारा सांसारिक जीवन भी कामयाब, सफल और उद्देश्य पूर्ण होगा और आख़िरत में भी हम अपने पालनहार के निकट सफलता प्राप्त करके आख़िरत की कभी ख़त्म न होनेवाली नेमतें और इनाम हासिल कर सकेंगे।

हर काम : सिर्फ़ अल्लाह के लिए

इस्लाम में इस बात की बुनियादी अहमियत है कि हमारा हर अमल व हर काम सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए हो और इसके सिवाय हमारा और कोई उद्देश्य न हो। हज़रत उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया है, "आमाल (कर्मों) का दारोमदार सिर्फ़ नीयत पर है और (अल्लाह के यहां बदले में) आदमी को वही कुछ मिलेगा जिसकी उसने नीयत की होगी तो (मिसाल के तौर पर) जिसने अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिजरत की होगी वह वास्तव में हिजरत होगी और जिसकी हिजरत दुनिया हासिल करने या किसी औरत से शादी के लिए होगी तो उसकी हिजरत उसी के लिए होगी, जिसके लिए उसने हिजरत की होगी।"

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

प्यारे नबी (सल्ल०) के कहने का मतलब यह है कि अच्छे आमाल का अल्लाह के निकट स्वीकृत होना नीयत पर निर्भर है। अगर नीयत ठीक है तो उसका सवाब मिलेगा वरना नहीं मिलेगा। कोई अमल (कर्म) चाहे देखने में अच्छा हो, उसका इनाम आख़िरत में केवल तभी मिलेगा जब वह ख़ुदा की ख़ुशनूदी व रज़ा के लिए किया गया हो। अगर उस अमल का मक़सद दुनिया प्राप्त करने की इच्छा हो तो आख़िरत में कोई अज्र नहीं मिलेगा बल्कि उलटे दिखावा करने के जुर्म में उस आदमी को सज़ा भोगनी पड़ेगी।

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाता है—

"और उनको केवल यह आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह की इबादत करें इस हाल में कि वे दीन (धर्म) और फ़रमाँबरदारी को उसके लिए ख़ालिस (विशुद्ध) करनेवाले हैं।"

(क़ुरआन, 98 : 5)

दूसरी जगह पर कहा गया —

"अल्लाह को (इन क़ुरबानियों का) गोश्त और ख़ून नहीं पहुँचता,

हाँ, मगर तुम्हारा तक़वा (ईश-भय) उसको पहुँचता है।"

(क़ुरआन, 22 : 37)

इसी प्रकार क़ुरआन में एक अन्य जगह यूँ कहा गया—

"तुम्हारे दिलों में जो कुछ है उसे तुम छिपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह हर हाल में उसे जान लेता है।" (क़ुरआन, 3 : 29)

क़ुरआन मजीद के इन कथनों से साफ़ ज़ाहिर है कि आमाल का दारोमदार नीयत पर है। अल्लाह की इबादत के आदेश के साथ यह भी हुक्म है कि यह बन्दगी और फ़रमाँबरदारी केवल अल्लाह के लिए होनी चाहिए। अल्लाह को क़ुरबानियों का गोश्त और ख़ून नहीं चाहिए, बल्कि इनके पीछे जो जज़्बात, प्रवृत्तियाँ और प्रेरक तत्व होते हैं और अच्छे आमाल के नतीजे में जो रूहानी तरक़्क़ी और दिल को जो पाकीज़गी (पावनता) हासिल होती है, वही अपेक्षित होती है। अल्लाह तआला सिर्फ़ दिखाई देनेवाले कामों पर ही निगाह नहीं रखता बल्कि दिमाग़ों के विचार और ख़यालात, इरादों और उमंगों को भी वह जानता है और जज़ा (इनाम) व सज़ा (दण्ड) देने में वह अपने इस ज्ञान से निश्चय ही काम लेगा। विश्व-नायक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का कथन है—

"जिसने अल्लाह ही के लिए मुहब्बत की और अल्लाह ही के लिए नफ़रत की और अल्लाह ही के लिए दिया और अल्लाह ही के लिए देने से रुका तो उसने (अपने) ईमान को कामिल (पूर्ण) कर लिया।"

(हदीस : अबू दाऊद)

तात्पर्य यह है कि जिसने अपने ताल्लुक़ात व मामलों को अपनी निजी इच्छा और अन्य उद्देश्यों के बजाय सिर्फ़ अल्लाह की इच्छा के अधीन कर दिया वही अल्लाह के निकट मुकम्मल ईमानवाला है। प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"अल्लाह तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारे कर्मों को देखता है।" (हदीस : मुस्लिम)

यानी तुम्हारे आमाल के पीछे जिस क़द्र ख़ुलूस (निष्ठा) होगा, तुम्हारे प्रयासों में जितनी ज़्यादा अल्लाह को प्रसन्न करने की चाह होगी, उतने ही

ज़्यादा तुम्हारे आमाल अल्लाह के यहाँ पसन्द किए जाएँगे और उतने ही अच्छे इनाम (अज्र) से तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें नवाज़ेगा।

अगर कोई दिल अमल के ख़ुलूस से ख़ाली हो तो ऐसे अमल को ख़ुदा के यहाँ क़बूल नहीं किया जाता। जैसे चट्टान, जिसपर मिट्टी पड़ी हो, बारिश से फ़सल नहीं उगा सकती। लेकिन अगर तबीअत में ख़ुलूस भरा हो, उसकी बरकतों का उसपर साया हो तो यह ख़ुलूस मामूली चीज़ को भी पहाड़ के बराबर वज़नी बना देता है और अगर ख़ुलूस से ख़ाली हो तो भूसे का ढेर अल्लाह के निकट क्या अहमियत हासिल कर सकता है। इसी लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"अपने दीन को ख़ालिस (विशुद्ध) कर लो तो थोड़ा सा-अमल (भी) जहन्नम से बचाने के लिए काफ़ी होगा।" (हदीस : हाकिम)

नेकियों और भलाइयों का अज्र (इनाम) हदीसों में दस गुना से लेकर सौ गुना तक बताया गया है। मगर इसका दारोमदार दिलों में छिपे ख़ुलूस और नीयत पर है, जिसे सिर्फ़ ख़ुदा ही जान सकता है जो हाज़िर व ग़ायब (परोक्ष-अपरोक्ष) का ज्ञान रखता है। अत: भले कामों के बदले में बढ़ोत्तरी काम करनेवाले की नीयत के लिहाज़ से होती है और इस लिहाज़ से होती है कि उस काम में ख़ुदा को राज़ी करने की कितनी फ़िक्र की गई है। हज़रत इब्ने-अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं एक काम करता हूँ जिसका मक़सद अल्लाह को राज़ी करना होता है और मेरी ख़ाहिश होती है कि मेरे वतन के लोग उसे देखें तो इस बारे में आपका क्या ख़याल है?" अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जवाब देने से पहले यह आयत नाज़िल हुई—

"तो जो कोई अपने रब (पालनहार) से मिलने की उम्मीद रखता हो उसे चाहिए कि अच्छे काम करे और बन्दगी (व आज्ञापालन) में अपने रब के साथ किसी को साझी न बनाए।"

(क़ुरआन, 18:110)

अल्लाह के प्यारे रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब आख़िरी ज़माना आएगा तो मेरी उम्मत में तीन फ़िरक़े हो जाएँगे। एक फ़िरक़ा निष्ठा व

ख़ुलूस के साथ अल्लाह की इबादत करेगा, दूसरा फ़िरक़ा दुनिया को दिखाने के लिए इबादत करेगा और तीसरा फ़िरक़ा इसलिए इबादत करेगा ताकि उसके द्वारा लोगों का माल खाए। जब अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उन सबको इकट्ठा करेगा तो आख़िरी फ़िरक़े से कहेगा, "मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! बता मेरी इबादत से तू क्या चाहता था?" तो वह (फ़िरक़ा) जवाब देगा, "तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! मैं दीनदारी का दिखावा करके लोगों का माल खा रहा था।" अल्लाह तआला कहेगा, "जो कुछ तूने इकट्ठा किया था उसने तुझे फ़ायदा न पहुँचाया। इसे जहन्नम में डाल दो।" फिर (अल्लाह तआला) उस फ़िरक़े से कहेगा जो केवल दिखावे के लिए अल्लाह की इबादत करता था, "मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! बता तेरी मंशा क्या थी?" वह (फ़िरक़ा) कहेगा, "तेरे जलाल और तेरी इज़्ज़त की क़सम! मेरा मक़सद सिर्फ़ लोगों को दिखाना था।" अल्लाह तआला कहेगा, "उससे कुछ भी मेरे पास नहीं पहुँचा। ले जाओ इसे जहन्नम में फेंक दो।" फिर अल्लाह तआला उस फ़िरक़े से पूछेगा जो (विशुद्ध रूप से) अल्लाह की इबादत करता था। अल्लाह तआला उससे पूछेगा, "मेरी इज़्ज़त और जलाल की क़सम! मेरी इबादत से तू क्या चाहता था?" वह कहेगा, "तेरी इज़्ज़त और तेरे जलाल की क़सम! तू उस व्यक्ति का हाल ज़्यादा जानता है जिसने तुझे याद किया और तेरी ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) चाही थी।" अल्लाह तआला कहेगा, "मेरे बन्दों ने सच कहा इन्हें जन्नत में ले जाओ।"

(हदीस : तबरानी)

अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"कहो (ऐ मुहम्मद)! मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह, सारे संसार के पालनहार के लिए है।" (क़ुरआन, 6 : 162)

अल्लाह पर भरोसा

अल्लाह पर भरोसे का मतलब यह है कि इंसान किसी भी मामले में अपनी पूरी कोशिश और जिद्दोजुहद करके नतीजे को अल्लाह तआला पर छोड़ दे। इसके साथ उसे यह भी यक़ीन हो कि कामयाबी उसकी अपनी कोशिशों की वजह से नहीं, बल्कि अल्लाह की मेहरबानी से मिलेगी।

दिल में अल्लाह पर भरोसा करने की भावना पैदा हो जाने का निश्चित परिणाम यह होता है कि हालात कितने ही ख़राब क्यों न हों, इंसान निराशा व नाउम्मीदी का शिकार नहीं होता। यह ठीक है कि यह दुनिया कारण-जगत है। यहाँ हर घटना के पीछे कोई कारण होता है, मगर एक सच्चाई इससे भी बड़ी है और वह यह कि अल्लाह ही कारणों का पैदा करनेवाला है। जब उसे किसी क़ौम या व्यक्ति को कामयाबी देनी होती है तो वह ऐसे कारण पैदा कर देता है जिनके परिणामस्वरूप सफलता निश्चित हो जाती है।

जो दिल अल्लाह की मुहब्बत से भरे होते हैं, उनमें दूसरी बेहतरीन ख़ूबियों के साथ अल्लाह पर भरोसा करने की भावना भी पूर्णरूप से पाई जाती है। और यही भरोसा उन्हें अडिग और आशावादी बनाता है। इसी से उनके अन्दर निर्भीकता, साहस और बहादुरी पैदा होती है।

क़ुरआन मजीद में है—

"और उस ज़िन्दा पर भरोसा रखो जिसको मौत नहीं है। और उसकी प्रशंसा के साथ उसकी पाकी (पवित्रता) बयान करो, वह अपने बन्दों के गुनाहों को ख़ूब जानता है।"

(क़ुरआन, 25 : 58)

एक दूसरी जगह कहा गया—

"और उस ग़ालिब (प्रभावी) मेहरबान पर भरोसा रख, जो तुझे उस समय देखता है जब तू रात को उठता है और सजदा करने वाले लोगों में तुम्हारी गतिविधियों पर निगाह रखता है।"

(क़ुरआन, 26 : 217-219)

हर व्यक्ति की यह ज़िम्मेदारी है कि वह मुश्किलों और मुसीबतों पर क़ाबू पाने के लिए कोशिश करे, यहाँ तक कि रास्ता साफ़ हो जाए। अगर वह उन पर क़ाबू पा गया तो मानो उसने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी। और अगर पूरी कोशिश और जिद्दोजुहद के बावजूद वह कामयाब न हो सका तो अल्लाह का सहारा ही उसके लिए बेहतरीन पनाहगाह है, जहाँ पहुँचकर वह हताशा और निराशा से बच सकता है। इन दोनों ही हालतों में वह सफल रहेगा। इस्लाम सन्देह व संकोच की स्थिति को पसन्द नहीं करता।

प्यारे नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया —

"ताक़तवर ईमानवाला कमज़ोर ईमानवाले से बेहतर और अल्लाह के निकट ज़्यादा पसन्दीदा है। और हर एक में भलाई है। फ़ायदेमन्द चीज़ों की तमन्ना करो और अल्लाह से मदद चाहो और विनम्र बनो। अगर तुम्हें कोई क्षति पहुँचे तो यह न कहो कि अगर मैंने यूँ किया होता तो ऐसा नतीजा निकलता बल्कि यूँ कहो कि अल्लाह क़ादिर (सामर्थ्यवान) है, वह जो चाहे फ़ैसला करे इसलिए अगर-मगर का चक्कर शैतान के कामों का दरवाज़ा खोलता है।" (हदीस : मुस्लिम)

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"फिर जब (ऐ नबी!) तुम्हारा इरादा किसी राय पर जम जाए तो अल्लाह पर भरोसा रखो। अल्लाह को वे लोग पसन्द हैं जो उसी के भरोसे पर काम करते हैं। अल्लाह तुम्हारी मदद पर हो तो कोई ताक़त तुम पर प्रभावी होनेवाली नहीं और (अगर अल्लाह) तुम्हें छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद कर सकता है। तो जो सच्चे ईमानवाले हैं उन्हें अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।" (क़ुरआन, 3 : 159-160)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"मेरी उम्मत में सत्तर हज़ार लोग बिना हिसाब के जन्नत में जाएँगे और ये ख़ुदा के वे बन्दे होंगे, जो जादू-मंतर नहीं कराते और अपशकुन नहीं

लेते। और अपने पालनहार पर भरोसा करते हैं।''

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

यहाँ इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है कि ख़ुदा पर भरोसा करनेवाले दुख और बीमारी या किसी और तकलीफ़ के समय या कोई काम करने से पहले तंत्र-मंत्र या शकुन-अपशकुन जैसे कृत्य, जिन्हें इस्लाम ने पूर्णतः निषिद्ध घोषित किया है, नहीं करते बल्कि किसी तकलीफ़ के दूर होने या किसी कार्य के सफल होने के सम्बन्ध में ख़ुदा ही पर भरोसा करते हैं।

भरोसा करनेवालों को अपनी कोशिश और प्रयास का तुरन्त कोई फल मिले या न मिले वे ख़ुदा की मर्ज़ी पर राज़ी रहते हैं। और ख़ुदा पर भरोसा करते हुए अपनी कोशिशों को जारी रखते और ख़ुदा से ख़ैर और भलाई चाहते रहते हैं।

हज़रत सअद (रज़ि०) से रिवायत है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

''आदमी की ख़ुशक़िस्मती और ख़ुशनसीबी में से यह है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके लिए जो भी फ़ैसला किया जाए, वह उस पर राज़ी रहे। और आदमी की बदक़िस्मती और बदनसीबी में से यह है कि वह अपने बारे में अल्लाह तआला के फ़ैसले से नाख़ुश हो।''

ख़ुदा पर भरोसा करनेवालों का हौसला भी बुलन्द होता है। वे ख़ुदा पर भरोसा करके बड़े-बड़े कामों में हाथ डाल देते हैं। अगर वे काम पूरे हो जाएँ तो वे इतराते नहीं और घमण्ड नहीं करते क्योंकि उनका ईमान इस बात पर होता है कि कामयाबी केवल हमारी कोशिश से नहीं बल्कि वास्तव में ख़ुदा की मेहरबानी से मिलती है। और अगर किसी वजह से वे काम पूरे न हो सकें तो वे हताशा का शिकार नहीं होते कि आस व उम्मीद छोड़कर बैठ जाएँ। क़ुरआन में एक जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है—

> ''कोई मुसीबत ऐसी नहीं जो ज़मीन में या तुम्हारे अपने ऊपर आई हुई हो और हमने उसको पैदा करने से पहले एक किताब में न लिख दिया हो। ऐसा करना अल्लाह के लिए बहुत आसान है, ताकि जो कुछ भी नुक़सान तुम्हें हो, उसपर तुम निराश न हो और जो कुछ अल्लाह तुम्हें प्रदान करे उस पर फूल न जाओ।''
>
> (क़ुरआन, 57 : 22-23)

सच्चाई की अहमियत

इंसानी समाज में सच्चाई की बड़ी अहमियत है और सच्चाई व साफ़दिली सारी बुराइयों को ख़त्म करनेवाली चीज़ है।

अल्लाह तआला ने भी इंसान को सच बोलने का आदेश दिया है। क़ुरआन में है—

"ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो और सीधी-सच्ची बात बोलो, (जिसके परिणामस्वरूप) तुम्हारे आमाल (कर्म) ठीक होंगे और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दिया जाएगा। और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेगा वही कामयाब होगा।" (क़ुरआन, 33 : 70-71)

प्यारे नबी (सल्ल०) ने भी फ़रमाया—

"सच्चाई नेकी है और नेकी जन्नत तक ले जाती है। झूठ अल्लाह की नाफ़रमानी है और अख़्लाक़ की ख़राबी है। और अल्लाह की नाफ़रमानी और बदअख़्लाक़ी जहन्नम तक ले जाती है।" (हदीस : मुस्लिम)

इस्लाम में सच्चाई की इतनी अहमियत है कि हर मुसलमान को हमेशा सच बोलने के साथ-साथ इस बात की भी ताकीद की गई है कि वह हमेशा सच्चों के साथ और सच्चों की संगति में रहे। अल्लाह तआला ने ईमानवालों को ताकीद की है—

"ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो और सिर्फ़ सच्चों के साथ रहो।" (क़ुरआन, 9:119)

प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"सच्चाई अपनाओ, भले ही तुम्हें उसमें अपनी बरबादी और मौत नज़र आए, क्योंकि अस्ल में नजात और ज़िन्दगी सच्चाई ही में है। और झूठ से बचो, भले ही बज़ाहिर उसमें तुम्हें नजात और कामयाबी नज़र आए। क्योंकि झूठ का अंजाम बरबादी और नाकामी है।" (हदीस : मिश्कात)

एक मौक़े पर प्यारे नबी (सल्ल०) ने सहाबा किराम (रज़ि०) से इरशाद फ़रमाया—

"जो यह चाहे कि अल्लाह व उसके रसूल से उसको मुहब्बत हो या अल्लाह और उसका रसूल उससे मुहब्बत करे तो उसके लिए अनिवार्य है कि जब बात करे तो हमेशा सच बोले।" (हदीस : मिश्कात)

एक और रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से किसी ने पूछा—

"ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नती की क्या पहचान है?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "सच बोलना।" एक दूसरी हदीस में है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "झूठ बोलना मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) की एक ख़ास निशानियों में से है।" (हदीस : मिश्कात)

सच्चाई का अर्थ केवल यही नहीं कि आदमी कोई बात हक़ीक़त के खिलाफ़ न कहे बल्कि सच्चाई कई प्रकार की होती है। जैसे— बात की सच्चाई, नीयत की सच्चाई, इरादे की सच्चाई, अमल की सच्चाई और अहद (वचन व प्रतिज्ञा) की सच्चाई आदि।

बात की सच्चाई यह है कि इंसान किसी प्रकार का झूठ न बोले। किसी घटना या ख़बर के बयान करने में अपनी ओर से न तो उसमें कमी करे और न उसे बढ़ा-चढ़ाकर बयान करे, बल्कि जो कुछ सुना या देखा है उतना ही बयान करे। नीयत की सच्चाई यह है कि इंसान जिस काम के करने की नीयत करे, ख़ुलूस (निष्ठा) के साथ करे। उसमें ख़ुदग़रज़ी, स्वार्थ और धोखे की मिलावट न हो। जैसे कोई व्यक्ति ख़ैरात (दान) करने की नीयत करे और उसके दिल में यह भी ख़याल हो कि ऐसा करने से उसका नाम प्रसिद्ध होगा तो वह नीयत का सच्चा नहीं।

इरादे की सच्चाई यह है कि इंसान जब किसी काम का इरादा करे तो मज़बूती के साथ करे। उसमें शक व सन्देह को जगह न मिले। अमल की सच्चाई यह है कि इंसान अपने कामों में बनावट को दाख़िल न होने दे। अपनी हालत को दूसरों की नज़र में ऐसा न दिखाए जैसा कि वास्तव में नहीं। जैसे कोई व्यक्ति आलिम न हो और आलिमों का-सा अन्दाज़ अपनाए,

तो ऐसा व्यक्ति यद्यपि ज़बान से झूठ नहीं बोलता मगर अमल में तो झूठा है।

अहद की सच्चाई यह है कि इंसान ने जिस काम को पूरा करने का अहद (वचन या प्रतिज्ञा) किया हो, सामर्थ्यभर उसमें कोशिश करे और जब तक अपने अहद को पूरा न करे अपनी कोशिश जारी रखे।

अल्लाह तआला ने सच्चे लोगों को बड़े इनाम की ख़ुशख़बरी दी है। क़ुरआन में एक जगह कहा गया—

"निश्चय ही जो मर्द और औरतें मुस्लिम हैं, मोमिन (ईमानवाले) हैं, (अल्लाह का) आदेश माननेवाले हैं, सच्चे हैं, सब्र करनेवाले हैं, अल्लाह के आगे झुकनेवाले हैं, सदक़ा देनेवाले हैं, रोज़ा रखनेवाले हैं, अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की रक्षा करनेवाले हैं और अल्लाह को बहुत याद करनेवाले हैं, अल्लाह ने उनके लिए माफ़ी और बड़ा इनाम जुटा रखा है।"

(क़ुरआन, 33 : 35)

एक हदीस में है कि किसी ने प्यारे नबी (सल्ल०) से पूछा, "क्या ईमानवाला कायर हो सकता है?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हाँ! हो सकता है।" फिर पूछा गया, "क्या ईमानवाला कंजूस हो सकता है?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हाँ! हो सकता है?" फिर पूछा गया, "क्या ईमानवाला झूठा हो सकता है?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "नहीं!" (यानी झूठ की सिफ़त ईमान के साथ जमा नहीं हो सकती।)

(हदीस : मिश्कात)

ज़बान की हिफ़ाज़त

ज़बान के मामले में इंसान बहुत ही असावधानी बरतता है। हालाँकि जो शब्द हमारी ज़बान से निकलते हैं वे वातावरण में विलीन होकर नहीं रह जाते, बल्कि हमारे विचार व ख़यालात पर अपना प्रभाव डालते हैं। अपने अंदर ज़बान के ये प्रभाव सुनने व देखने के प्रभावों से भी ज़्यादा विस्तार व गहराई रखते हैं। क्योंकि यह ज़रूरी नहीं है कि जो चीज़ अपनी आँखों और कानों को भली लगे वह दूसरों को भी प्रभावित करे। इसके विपरीत ज़बान अभिव्यक्ति का ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा आदमी अपने अच्छे या बुरे विचारों का प्रभाव सामनेवाले व्यक्ति पर डालने की कोशिश करता है। अगर इसके नतीजे में सामनेवाले की प्रतिक्रिया उसके अनुसार है तो उसके विचारों को और अधिक प्रभावशीलता और बल मिलता है। और वे विचार व्यक्तिगत परिधि से निकलकर सामूहिक क्षेत्र में प्रभाव डालने लगते हैं और उसी अनुपात से उनकी शक्ति और प्रभाव में वृद्धि होती रहती है।

सोचिए! अगर यह महाशक्ति (अर्थात ज़बान) सीधे रास्ते से हट जाए और ज़ज़बात जैसे नाज़ुक और कमज़ोर पहलुओं पर हमला कर दे तो कितना अधिक बिगाड़ पैदा कर सकती है।

हज़रत सुहैल बिन सअद (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जो व्यक्ति अपनी ज़बान और अपनी शर्मगाह (गुप्तांगों) की हिफ़ाज़त की ज़मानत दे, मैं उसको जन्नत की ज़मानत देता हूँ।" (हदीस)

एक और अवसर पर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला ज़बान और शर्मगाह की बुराई से बचा ले वह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।" (हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि विश्वनायक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"इंसान ऐसी बात कह जाता है कि वह उसके नुक़सान को नहीं समझता और उसके कारण दोज़ख़ में इतनी दूर जा गिरता है जितनी दूरी पूरब-पश्चिम के बीच है।" (हदीस)

ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई करना), चुग़लख़ोरी, लाँछन लगाना, झूठ बोलना, दोष निकालना, नुक्ताचीनी करना, ताने मारना और ग़लत अफ़वाहें फैलाना आदि ऐसे गुनाह हैं जो ज़बान चलाकर ही किए जाते हैं। अगर इंसान सिर्फ़ ज़बान को क़ाबू में रखे तो इन तमाम गुनाहों से बच सकता है।

हज़रत सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह सक़फ़ी (रज़ि०) बयान करते हैं कि मैंने प्यारे नबी (सल्ल०) की सेवा में निवेदन किया, "ऐ ख़ुदा के रसूल! मुझे कोई ऐसी बात बता दीजिए जिसे मैं मज़बूती से पकड़ लूँ।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "तुम कहो कि मेरा पालनहार अल्लाह है फिर इस बात पर क़ायम रहो।" मैंने निवेदन किया, "ऐ ख़ुदा के रसूल! आपके ख़याल में कौन-सी चीज़ मेरे लिए सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है?" आप (सल्ल०) ने अपनी मुबारक ज़बान को पकड़ा और फ़रमाया, "यह।"

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है। वे प्यारे नबी (सल्ल०) से उद्धृत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब सुबह होती है तो इंसान के सारे अंग ज़बान के आगे विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि हमारे मामले में ख़ुदा से डर क्योंकि हम तेरे साथ बंधे हुए हैं। तू ठीक रही तो हम भी ठीक रहेंगे और अगर तूने ग़लत राह अपनाई तो फिर हम सब उसका नुक़सान भुगतेंगे।"

बे-लगाम ज़बान के नुक़सानों के बारे में प्यारे नबी (सल्ल०) के साथियों और नेक बुज़ुर्गों की बहुत-सी बातें रिवायत की गई हैं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

"मुसीबत की जड़ इंसान का बोलना है।"

उनके बारे में रिवायत की गई है कि वे अपनी ज़बान को बार-बार पकड़ते और फ़रमाते—

"इसने बहुत जगह फँसाया है।"

हज़रत उस्मान (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

''ज़बान का फिसलना पाँवों के फिसलने से ज़्यादा ख़तरनाक होता है।''

हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

''ज़बान वह दरिन्दा है कि छोड़ दो तो काट खाए।''

ख़्वाजा हसन बसरी (रह०) फ़रमाते हैं—

''अक़्लमन्द की ज़बान दिल के पीछे होती है। जब वह कुछ कहना चाहता है तो पहले दिल से पूछता है। अगर वह बात उसके फ़ायदे की होती है तो कहता है वरना रुक जाता है। जाहिल का दिल उसकी ज़बान की नोक पर होता है। वह दिल से नहीं पूछता जो ज़बान पर आता है बक जाता है।''

नर्म मिज़ाजी

इंसान में दो आदतें पाई जाती हैं— नर्मी व सख़्ती, और दोनों पूरी ज़िन्दगी पर अपना प्रभाव डालती हैं। नर्मी और मेहरबानी पसन्दीदा गुण है और सख़्ती और कठोरता नापसन्दीदा। प्यारे नबी (सल्ल०) ने हमें ताकीद की है कि हम लोगों के साथ नर्मी का बर्ताव करें और सख़्ती का रवैया न अपनाएँ।

विश्वनायक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया —

"अल्लाह तआला ख़ुद मेहरबान है (नर्मी और मेहरबानी करना उसका निजी गुण है) और नर्मी और नर्म मिज़ाजी को पसन्द करता है। वह नर्म व्यवहार पर इतना देता है कि उसके अतिरिक्त किसी चीज़ पर इतना नहीं देता।" (हदीस : मुस्लिम)

कुछ लोग अपने स्वभाव, व्यवहार और बर्ताव में सख़्त होते हैं और कुछ लोग नर्म। कुछ लोग समझते हैं कि कठोर व्यवहार से आदमी वह कुछ प्राप्त कर लेता है जो नर्मी से प्राप्त नहीं कर सकता।

प्यारे नबी (सल्ल०) ने इस हदीस में इस ग़लत धारणा का सुधार किया है। सबसे पहले तो आप (सल्ल०) ने नर्म मिज़ाजी की बड़ाई और ख़ूबी बयान की कि वह अल्लाह तआला का निजी गुण है, इसके बाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला को यह बात पसन्द है कि उसके बन्दों का पारस्परिक व्यवहार और बर्ताव भी नर्मी का हो। फिर अन्त में आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि उद्देश्यों का पूरा होना, न होना और किसी चीज़ का मिलना न मिलना तो अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर निर्भर है जो कुछ होता है उसी के फ़ैसले से होता है और उसका क़ानून है कि वह नर्मी पर इतना देता है जितना किसी और चीज़ पर नहीं देता। जो व्यक्ति चाहे कि अल्लाह तआला उसपर मेहरबान हो, उसे चाहिए कि वह भी दूसरों के मामले में मेहरबान हो और बजाय सख़्ती के नर्मी को अपना नियम बनाए।

हज़रत जरीर (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने

फ़रमाया—

"जो आदमी नर्मी के गुण से वंचित किया गया, वह सारी भलाइयों से वंचित किया गया।"[1] (हदीस : मुस्लिम)

तात्पर्य यह है कि नर्मी का गुण इतनी बड़ी चीज़ है और उसका दर्जा इतना ऊँचा है कि जो इससे वंचित रहा, मानो वह अच्छाई और भलाई से बिल्कुल वंचित और ख़ाली हाथ रहा। या यूँ कहा जाए की इंसान की अधिकतर अच्छाइयों और भलाइयों की जड़-बुनियाद और मुख्य स्रोत चूँकि उसका नर्म स्वभाव है, अत: जो व्यक्ति इससे वंचित रहा, वह हर प्रकार की भलाई और अच्छाई से वंचित रहेगा।

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि विश्वनायक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जिस आदमी को ख़ुदा की ओर से नर्मी का हिस्सा मिला उसको दुनिया और आख़िरत की भलाइयों का हिस्सा मिल गया और जो नर्मी से वंचित रह गया, वह दुनिया और आख़िरत दोनो में ख़ैर और भलाई के हिस्से से वंचित रहा।"

नैतिक जीवन को आकर्षण, पराकाष्ठा, सौन्दर्य और आश्चर्यजनक सुन्दरता देनेवाली चीज़ नर्मी और कोमलता है बल्कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने तो हज़रत आइशा (रज़ि०) से यहाँ तक फ़रमाया है—

"नर्मी जिस चीज़ में भी होती है उसको शोभायमान बनाती है और जिस चीज़ से भी नर्मी अलग कर ली जाए उसको कुरूप बना देती है।" (हदीस)

हज़रत आइशा (रज़ि०) ही से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आने की इजाज़त चाही। आप (सल्ल०) ने

---

1. यहाँ यह बात ध्यान में रहे कि अल्लाह तआला नर्मी के गुण से उन्हीं को वंचित रखता है और बुराइयों और ख़राबियों में उन्हीं को मुब्तला करता है जो स्वयं अच्छे बनना नहीं चाहते। क्योंकि अल्लाह ने इंसान को अच्छाई या बुराई दोनों में से किसी को भी चुनने का अधिकार दे रखा है इसलिए वह जबरन किसी को भलाई या बुराई की ओर नहीं चलाता।

फ़रमाया कि "अच्छा उसे आने दो। (मगर) वह अपने क़बीले का एक बुरा आदमी है।" लेकिन जब वह व्यक्ति दाख़िल हुआ तो आप (सल्ल०) ने उसके साथ नर्मी के साथ बात की। हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं कि मैंने आपसे निवेदन किया कि "ऐ अल्लाह के रसूल! आपने उसके बारे में बुरी राय ज़ाहिर की थी, फिर आपने उसके साथ नर्मी से बात की!" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ऐ आइशा! क़ियामत के दिन अल्लाह के निकट रुतबे में सबसे बुरा आदमी वह होगा जिसकी बदज़बानी से बचने के लिए लोग उसे छोड़ दें (इसलिए मैंने इस व्यक्ति से नर्मी से बात की)।"

(हदीस : मुस्लिम)

इंसान के गुणों में नर्मी और सख़्ती की यह विशेषता है कि उनके इस्तेमाल का क्षेत्र बहुत ज़्यादा विस्तृत है। जिस व्यक्ति के मिज़ाज और व्यवहार में सख़्ती होगी, वह अपने घरवालों, बीवी-बच्चों और नातेदारों के लिए सख़्त होगा, पड़ोसियों के मामले में भी कठोर होगा। अगर अध्यापक है तो विद्यार्थियों के मामले में सख़्त होगा। इसी प्रकार अगर शासक और अधिकारी है तो जनता और अधीनस्थों के मामले में सख़्त होगा। ज़िन्दगी में जहाँ-जहाँ और जिन-जिन से उसका वास्ता पड़ेगा उनके साथ उसका व्यवहार सख़्त होगा। और इसका परिणाम यह होगा कि उसकी ज़िन्दगी ख़ुद उसके लिए और उससे सम्बन्ध रखनेवालों के लिए निरन्तर मुसीबत बन जाएगी। और इसके विपरीत जिस आदमी के मिज़ाज और व्यवहार में नर्मी होगी वह घरवालों, पड़ोसियों, अधिकारियों, अधीनस्थों, कर्मचारियों, शिष्यों, अध्यापकों, अपनों और बेगानों तात्पर्य यह कि सब के साथ नर्म होगा। और इसका परिणाम यह होगा कि अपनी नर्मी के कारण वह ख़ुद भी राहत और चैन से रहेगा और दूसरों के लिए भी सुख व शान्ति का कारण होगा। फिर यह नर्मी आपसी प्रेम व लगाव पैदा करेगी और मान-सम्मान और भला चाहनेवाले जज़्बात को उभारेगी और इसके विपरीत कठोर स्वभाव व तीखापन, दिलों में दूरी व दुश्मनी पैदा करेगा और ईर्ष्या व दुर्भाव और लड़ाई-झगड़े के ख़राब जज़्बात को भड़काएगा। यही बात है जिसको अल्लाह के प्यारे रसूल (सल्ल०) ने यूँ बयान किया है—

"अल्लाह तआला जिस घर के लोगों को नर्मी का गुण प्रदान करता है, वह उस गुण के कारण उन्हें भलाइयाँ पहुँचाता है, और जिस घर के लोगों को नर्मी के इस गुण से वंचित करता है उनको बुराइयाँ और ख़राबियाँ पहुँचाता है।" (हदीस : बैहक़ी)

मानो घर का सुकून व आराम और ख़ैर व बरकत, नर्मी और मृदुल स्वभाव पर निर्भर है। और घर की ख़राबी और उजाड़पन यह है कि घरवाले इस बड़ी ख़ूबी से वंचित हों। जब अल्लाह किसी घर के लिए भलाई का फ़ैसला करता है तो घरवालों को नर्म स्वभाव प्रदान कर देता है और जब किसी घर के लिए तबाही और ख़राबी का फ़ैसला करता है तो घरवालों को नर्मी और नर्म स्वभाव से वंचित कर देता है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) लोगों की मुहब्बत और सामीप्य का केन्द्र इसी लिए बने रहे कि ख़ुदा ने अपनी विशेष कृपा से आप (सल्ल०) को नर्मी, मुहब्बत और मनमोहकता का नमूना बनाया था। अगर आप (सल्ल०) सख़्त-मिज़ाज और संगदिल होते तो आप पर जान न्यौछावर करनेवाले लोग आपके पास से छँट जाते।

क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"यह अल्लाह की ज़बरदस्त रहमत की वजह से है कि आप (प्यारे नबी सल्ल०) इनके लिए बहुत नर्म मिज़ाज हैं। वरना कहीं आप तीखे स्वभाववाले और संगदिल होते तो ये सब आपके आस-पास से छँट जाते।" (क़ुरआन, 3 : 159)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुमको ऐसे व्यक्ति की सूचना दूँ जो दोज़ख़ के लिए हराम है? (सुनो मैं बताता हूँ) दोज़ख़ की आग हर उस हर ऐसे व्यक्ति पर जो स्वभाव का तीखा न हो, नर्म हो, लोगों से क़रीब रहनेवाला हो, नर्म मिज़ाज हो।" (हदीस : अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

और हज़रत हारिसा बिन वहब (रज़ि०) का बयान है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"बदज़बान और बुरे स्वभाववाला आदमी जन्नत में नहीं जाएगा।" (हदीस : अबू दाऊद)

नर्मी भलाइयों की कुंजी है

ईमान का स्वाभाविक परिणाम मुहब्बत है और मुहब्बत सख़्तदिली के साथ जमा नहीं हो सकती। एक ईमानवाला जो सिर से पाँव तक प्रेम का नमूना होता है, वह नर्मी का भी नमूना होता है, वरना उसके ईमान में कोई भलाई नहीं। तमाम भलाइयाँ चाहे उनका सम्बन्ध आख़िरत की ज़िन्दगी से हो या दुनिया की ज़िन्दगी से, नर्मी से जुड़ी हैं।

नर्मी बड़ी ख़ैर व बरकत की चीज़ है। नर्म स्वभाव वास्तव में नैतिकता की जान है। जिस प्रकार फूलों की नर्मी और उसकी नर्म व नाज़ुक पँखुड़ियाँ सभी को अच्छी लगती हैं, उसी प्रकार मिज़ाज व अख़्लाक़ की नर्मी में बड़ी दिलकशी पाई जाती है। दिलों को नर्मी के द्वारा मोड़ा जा सकता है, जबकि सख़्ती और कठोरता से लोगों को घबराहट होती है और वे हमसे दूर होने लगते हैं। नर्मी से बिगड़े काम भी बन जाते हैं, जबकि सख़्ती बने हुए काम भी बिगाड़ कर रख देती है। इसलिए जो बिगाड़ और फ़साद न चाहता हो बल्कि वह सुधार और दोस्ती का इच्छुक हो उसके लिए ज़रूरी है कि वह नर्मी की नीति अपनाए। इसी से दिलो-दिमाग़ का सुधार होता है और फिर इसी के द्वारा ज़िन्दगी में ख़ुशगवार माहौल बनता है। जिन लोगों के सामने जीवन का कोई बड़ा उद्देश्य हो उनके लिए बेहद ज़रूरी है कि वे हमेशा नर्मी का रवैया अपनाएँ और सख़्ती के व्यवहार से बचें। अल्लाह तआला ने ज़रत मूसा (अलै०) और हज़रत हारून (अलै०) से फ़रमाया था—

"दोनों जाओ फ़िरऔन के पास। निस्सन्देह वह उद्दण्ड और सरकश हो गया है। उससे नर्म बात कहना। शायद वह नसीहत हासिल करे और डरे।" (क़ुरआन, 20 : 43-44)

प्यारे नबी (सल्ल०) का तरीक़ा था कि जब आप किसी को किसी काम से कहीं अमीर (अधिकारी) या आमिल (कर्मचारी) बनाकर भेजते तो फ़रमाते, "ख़ुशख़बरी सुनाओ, नफ़रत न दिलाओ। आसानी पैदा करो,

सख़्ती में न डालो।" (हदीस)

एक मुसलमान अपने भाई के साथ ताल्लुक़ात में नर्मी का नमूना होता है। और वह अपने व्यवहार में इस बात की कोशिश करता है कि हर सम्भव तरीक़े से उसके दिल को ख़ुश रखे और उसको तकलीफ़ न होने दे। इस बात को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक उदाहरण से यूँ समझाया, "ईमानवाले सहनशील और नर्मदिल होते हैं, उस ऊँट की भाँति जिसकी नाक में नकेल पड़ी हो कि अगर खींचा जाए तो खिंचता चला जाए और पत्थर पर बिठाया जाए तो पत्थर पर बैठ जाए।" (हदीस)

नर्मी हर मामले में फलदायक सिद्ध होती है। इंसानों के साथ ही नहीं हमें जानवरों के साथ भी नर्मी का आदेश दिया गया है। एक रिवायत में है कि हज़रत आइशा (रज़ि०) एक ऊँट पर सवार हुईं जो मुँहज़ोर था। आप उसे सख़्ती के साथ इधर-उधर फेरने लगीं तो प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम्हें नर्मी से काम लेना चाहिए।"

नर्मी इंसान के मूल-स्वभाव, चरित्र-निर्माण और सुधार व दोस्ती की बुनियाद है। इससे दामन खींचना बिगाड़ को बुलावा देना है। नर्मी हमारे पैदा करनेवाले ख़ुदा का गुण है। नर्मी जहाँ कहीं है वहाँ ख़ैर है, भलाई है, सुन्दरता व ख़ूबसूरती है। जहाँ नर्म व्यवहार नहीं, वहाँ दोष और कमियाँ ही दिखाई पड़ेंगी।

शुक्र

हर इंसान पर अल्लाह तआला के अनगिनत एहसान व इनाम हैं। लेकिन इन इनामों का एहसास सच्चे ईमानवालों को ही होता है। जो आदमी यह सोचता है कि अल्लाह ने मेरे साथ यह व्यवहार किया है कि दुनिया में आने से पहले माँ के पेट में भोजन और हवा पहुँचाई। फिर जब मैं दुनिया में आया तो उस मेहरबान मालिक ने मेरे पालन-पोषण के क्या-क्या प्रबन्ध किए। मैं बिलकुल विवश और लाचार था, न बात कर सकता था और न चल फिर सकता था। ऐसे समय में मेरे मालिक ने मुहब्बत करनेवाले माँ-बाप की गोद में मेरी परवरिश कराई। मेरे शरीर को ताक़त दी। सोचने-समझने और बोलने की शक्ति प्रदान की। फिर इस बड़ी दुनिया की एक एक चीज़ को मेरे लिए क़ाबू में किया कि मैं हर चीज़ से लाभ उठा रहा हूँ और फिर मेरा पालनहार धरती व आकाश की पूरी मशीनरी मेरे लिए हर समय चला रहा है, ताकि मुझे भोजन और हवा मिले। इंसान एक ओर अपनी लाचारियाँ और कमज़ोरियाँ देखता है और दूसरी ओर ख़ुदा की रहमत की यह वर्षा देखता है तो उसके दिल में स्वतः अपने वास्तविक दाता व उपकारक के लिए मुहब्बत जाग उठती है। उसका दिल अल्लाह के प्रति आभार व धन्यभाव से भर जाता है और ज़बान से सहसा उसकी प्रंशसा के शब्द फूट पड़ते हैं। उसका रोम-रोम शुक्रगुज़ारी के जज़्बे में डूब जाता है और शरीर की सारी शक्तियाँ केवल मालिक को ख़ुश करने और उसकी ख़ुशी के रास्ते में प्रयासरत रहने में लग जाती हैं। इसी हालत का नाम "शुक्र और हम्द" (अर्थात अल्लाह का आभार प्रकट करना और उसकी प्रशंसा करना) है और यह सारी भलाइयों की जान है। हमपर अपने पालनहार का शुक्र अदा करना अनिवार्य है। जिन्दगी में इंसान दो ही रवैये अपना सकता है। एक रवैया तो यह है जिसे हम शुक्रगुज़ारी या कृतज्ञता प्रकट करना कहते हैं। और दूसरा रवैया नाशुक्री और एहसान को भूल जाने का है। शुक्र अस्ल में

नाशुक्री का विलोम है। इसी लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन में फ़रमाया है—

"तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा शुक्र अदा करो, मेरी नाशुक्री न करो।" (क़ुरआन, 2 : 152)

शुक्र केवल दिल और ज़बान से ही नहीं अदा किया जाता बल्कि शुक्र उस समय पूरा होता है जब बन्दा अपने आपको ख़ुदा की बन्दगी के सुपुर्द कर दे। ज़िन्दगी में उसके आदेशों का पालन करे। जिन कामों के करने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है वही करे और जिन कामों से ख़ुदा ने मना किया है उनसे रुक जाए और मालिक की दिखाई हुई राह पर चलता रहे। बन्दे से शुक्र (कृतज्ञता) की माँग अपने इसी व्यापक अर्थ में की गई है। अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"हमने इंसान को रास्ता दिखाया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा।" (क़ुरआन, 76 : 3)

और एक जगह कहा गया—

"और जब तुमको सूचना दी तुम्हारे पालनहार ने कि अगर तुम शुक्रगुज़ार बनोगे तो तुमको और भी नेमतें दूँगा और अगर तुम नाशुक्री दिखाओगे तो निस्सन्देह मेरा अज़ाब बहुत सख़्त है।" (क़ुरआन, 14 : 7)

एक दूसरी ज़गह कहा गया—

"क्या करेगा अल्लाह तुमको अज़ाब देकर अगर तुम (अल्लाह की) शुक्रगुज़ारी करो और उस पर ईमान लाओ और अल्लाह बड़ा क़द्र करनेवाला, सब कुछ जाननेवाला है।" (क़ुरआन, 4 : 147)

इसी तरह एक और जगह कहा गया—

"अल्लाह का शुक्र अदा करते रहो, और जो कोई (अल्लाह का) शुक्र अदा करेगा, अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करेगा और जो कोई नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बे-नियाज़ (निस्पृह), ख़ूबियोंवाला है।" (क़ुरआन, 31 : 12)

शुक्र का जज़्बा जब आदमी के दिल में जाग उठता है तो उसकी ज़िंदगी बन्दगी के रास्ते पर लग जाती है। प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जो व्यक्ति खाना खाए और फिर यह कहे 'शुक्र है अल्लाह का जिसने मुझे यह खाना दिया बिना मेरे प्रयास और ताक़त के, तो उससे जो गुनाह पहले हो चुके हैं, माफ़ हो जाएँगे।" (हदीस : अबू दाऊद)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जब कोई नया कपड़ा, अमामा (पगड़ी), कुर्ता या चादर इस्तेमाल करते तो उस (कपड़े) का नाम लेकर फ़रमाते, "ऐ अल्लाह तेरा शुक्र है कि तूने मुझे यह पहनाया। मैं तुझसे इसकी भलाई माँगता हूँ और जिस मक़सद से यह बनाया गया है उसके बेहतर पहलू का तलबगार हूँ। और मैं तेरी पनाह में अपने आपको देता हूँ इस कपड़े की बुराई से और उस मक़सद के बुरे पहलू से जिसके लिए यह बनाया गया है।" (हदीस : अबू दाऊद)

हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि प्यारे नबी (सल्ल०) जब रात को सोने के लिए लेटते तो अपना हाथ गाल के नीचे रखते और फ़रमाते, "ऐ अल्लाह, मैं तेरे नाम के साथ मरता हूँ और ज़िन्दा होता हूँ।" और जब जागते तो यह फ़रमाते कि "शुक्र है अल्लाह का कि उसने हमको ज़िन्दा किया मौत देने के बाद और हमको फिर जी कर उसके पास जाना है।"

(हदीस : बुख़ारी)

मोमिन बन्दा हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करता रहता है। जब वह खाना खाता है तो उसे यह एहसास होता है कि यह खाना मुझे मेरे पैदा करनेवाले मालिक ने दिया है। उसमें मेरी अपनी कोशिश व जिस्मानी ताक़त का क्या ज़ोर। मेरे पास जो कुछ है वह सब पालनहार ही का दिया हुआ है। अगर वह मुझे खाना न देता तो मैं कहाँ से खाता। जब कोई नया कपड़ा पहनता है तो ख़ुदा का शुक्र अदा करता है और उससे भलाई चाहता है। सोते-जागते हमेशा वह अपने मालिक को याद करता है और इस हक़ीक़त को हमेशा याद रखता है कि उसे (मरने के बाद) एक दिन पालनहार से मुलाक़ात करनी है, और उसके सामने अपने सारे कामों व गतिविधियों का हिसाब देना है।

प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"मोमिन की हालत अजीब होती है, वह जिस हाल में भी होता है उससे ख़ैर और भलाई ही समेटता है और यह ख़ुशनसीबी मोमिन के सिवा किसी को प्राप्त नहीं है। अगर वह तंगदस्ती, बीमारी और दुख की हालत में होता है तो सब्र करता है और जब वह ख़ुशहाली में होता है तो शुक्र करता है, और ये दोनों हालतें उसके लिए भलाई का कारण बनती हैं।"

प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया है—

"वे लोग जो तुममें से माल-दौलत और दुनियावी प्रतिष्ठा व रुतबे में कम हैं उनकी तरफ़ देखो तो तुम्हारे अन्दर शुक्र का जज़्बा पैदा होगा और उन लोगों की ओर न देखो जो तुमसे माल-दौलत में और दुनियावी साज़ोसामान में बढ़े हुए हैं, ताकि जो नेमतें तुम्हें इस वक़्त मिली हुई हैं वे तुम्हारी निगाह में मामूली और तुच्छ न हों वरना ख़ुदा की नाशुक्री का जज़्बा उभर आएगा।"

(हदीस : मुस्लिम)

ख़ामोशी की अहमियत

इंसान ज़बान को अगर वश में न रखे तो वह तरह-तरह के गुनाहों में फंस जाता है। इसलिए अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) ने जहाँ एक ओर ज़बान की हिफ़ाज़त करने का आदेश दिया है, वहीं दूसरी ओर ख़ामोशी की प्रशंसा और अहमियत भी बयान की है। ज़ाहिर है कि इंसान जितना कम बोलेगा, ग़लत और अनुचित बातें करने की सम्भावना भी उतनी ही कम होगी। ख़ामोशी की अहमियत का यह मतलब बिलकुल नहीं है कि इंसान ज़रूरत के वक़्त भी न बोले। क्योंकि जिस प्रकार बहुत-से गुनाह के काम ज़बान से किए जाते हैं उसी तरह बहुत-से नेक व भले काम भी ज़बान से किए जाते हैं। इसलिए ख़ामोशी के महत्व का आधार यह है कि यह बहुत अधिक व अनावश्यक बोलने के ख़तरों व नुक़सानों से इंसान को बचाने का एक माध्यम है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जो ख़ामोश रहा वह नजात (मुक्ति) पा गया।"

(हदीस : तिरमिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जो व्यक्ति ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि अपने पड़ोसी को तकलीफ़ न दे और जो व्यक्ति ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, उसे चाहिए कि भली बात कहे या फिर ख़ामोश रहे।" (हदीस : मुस्लिम)

हज़रत अबू हूरैरा (रज़ि०) से ही रिवायत है कि अल्लाह के प्यारे रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

"आदमी के इस्लाम की एक ख़ूबी यह है कि वह बेकार की बातें

करना छोड़ दे।'' (हदीस :तिरमिज़ी, इब्ने-माजा)

इस्लाम हक़ीक़त में हमारी ज़िन्दगी को सँवारता और उसे नैतिक व आध्यात्मिक सौन्दर्य और पवित्रता से सुसज्जित करता है। यह इस्लाम का विशेष गुण है कि आदमी बेकार बातों और फ़ुजूल कामों से दूर हो जाए और अपने समय को अच्छे और पसन्दीदा कामों में लगाए। कोई व्यक्ति अगर अपने समय को बे-मक़सद बातें करने और बेकार कामों में लगाता है तो इसका अर्थ यह है कि या तो वह इस्लाम से परिचित नहीं है या फिर इस्लाम को वह ठीक से अपने अन्दर उतार नहीं सका है। इस्लाम इंसान को ज़िन्दगी गुज़ारने का एक बेहतरीन तरीक़ा प्रदान करता है। इस तरीक़े से ग़फ़लत अक़्ल व समझ के भी विरुद्ध है और ईमान के भी।

हदीस में आया है कि एक सहाबी की मौत हो गई तो दूसरे सहाबी ने कहा कि तुझे जन्नत की ख़ुशख़बरी है। इस पर प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''तुम ख़ुशख़बरी दे रहे हो हालाँकि तुमको यह नहीं पता कि शायद इसने निरर्थक बात कही हो या ऐसी चीज़ के ख़र्च करने में कंजूसी की हो जो ख़र्च से घटती नहीं।''

विश्वनायक प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''आदमी अपने पैर से इतना नहीं फिसलता जितना अपनी ज़बान से फ़िसलता है।'' और फ़रमाया,''निस्सन्देह बन्दा अल्लाह तआला की नाराज़गी की कभी ऐसी बात कह देता है कि उसके कारण दोज़ख़ में उससे भी ज़्यादा गहरा गिरता चला जाता है जितना पूर्व और पश्चिम के बीच की दूरी है। हालाँकि उसका अपनी बात की ओर ध्यान भी नहीं होता कि उसने क्या कह दिया।''

(हदीस : मुस्लिम)

हज़रत लुक़मान हकीम से किसी ने पूछा कि आपको हिकमत का यह रुतेबा कैसे मिला? उन्होंने उत्तर दिया—

''मैं सच बोलता हूँ, अमानत अदा करता हूँ और बेकार बातों से बचता हूँ।''

इमरान बिन हत्तान बयान करते हैं कि मैं हज़रत अबू ज़र (रज़ि०) के पास आया तो मैंने उन्हें मसजिद में काली कमली लपेटे अकेले देखा। मैंने

निवेदन किया, "ऐ अबू ज़र, यह तनहाई कैसी है?" उन्होंने फ़रमाया कि "मैंने ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) को फ़रमाते सुना है कि "बुरे साथी से तनहाई बेहतर है। और अच्छा साथी तनहाई से बेहतर है। और अच्छी बात बताना ख़ामोशी से बेहतर है और बुरी बात बताने से चुप रहना बेहतर है।"

इसके विपरीत, ज़्यादा बोलने को एक अप्रिय कार्य समझा गया है। हज़रत इब्ने-उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "अल्लाह के ज़िक्र के सिवा किसी और बात की अधिकता दिल को सख़्त कर देती है। और अल्लाह से सबसे ज़्यादा दूर वह व्यक्ति होता है जो सख़्तदिल हो।" (हदीस : तिरमिज़ी)

कुछ लोगों को बेकार बातें करने की आदत होती है। हर वक़्त बोलना और बे-ज़रूरत बातें करना शालीनता व गम्भीरता के विरुद्ध है। ख़ुदा के यहाँ हर बात का ज़वाब देना है। हमें हमेशा यह बात याद रखनी चाहिए कि आदमी जो बात भी मुँह से निकालता है ख़ुदा का फ़रिश्ता उसे तुरन्त लिख लेता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"कोई बात उसकी ज़बान पर आती है कि एक निगराँ (उस को सुरक्षित करने के लिए) तैयार रहता है।"(क़ुरआन, 50 : 18)

दूसरों का भला चाहना

दूसरों का भला चाहने के लिए हदीसों में जो शब्द इस्तेमाल हुआ है वह "नुस्ह" और "नसीहत" है और यह शब्द अपने दामन में बड़े व्यापक अर्थ समेटे हुए है। इसी लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने यहाँ तक इरशाद फ़रमाया कि "दीन सरासर दूसरों का भला चाहना है।" और यह वाक्य आप (सल्ल०) ने तीन बार इरशाद फ़रमाया। (हदीस : मुस्लिम)

यह भला चाहना हर ईमानवाले पर दूसरे इंसानों और ईमानवाले का हक़ है। छोटों पर बड़ों का हक़ है और बड़ों पर छोटों का। आम लोगों पर ख़ास लोगों का हक़ है और ख़ास लोगों पर आम लोगों का। शासक पर जनता का हक़ है और जनता पर शासक का। इसी प्रकार हर व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति पर यह हक़ है कि वह उसका भला चाहे। भला चाहने का अर्थ बहुत व्यापक और आम है। उसका तक़ाज़ा है कि हम बराबर यह सोचते रहें कि हम इंसानों की भलाई के लिए क्या कुछ कर सकते हैं। हमें हर वक़्त उनकी बेहतरी और भलाई की चिन्ता घेरे रहे और हर पहलू से हम उन्हें लाभ पहुँचाने की कोशिश करें। उनका कोई नुक़सान हमें सहन न हो। दुनियावी और दीनी (धार्मिक) जिस तरीक़े से भी हम उन्हें सहायता पहुँचा सकते हों, उसमें कोताही न करें। इस शुभकामना की वास्तविक कसौटी यह है कि हम अपने भाई के लिए वही कुछ पसन्द करें जो अपने लिए पसन्द करते हों। इसलिए कि आदमी ख़ुद कभी स्वयं अपना बुरा नहीं चाह सकता बल्कि वह अपने लिए ज़्यादा से ज़्यादा लाभ, भलाई और बेहतरी के लिए प्रयासरत रहता है। वह स्वयं अपने अधिकारों में कमी गवारा नहीं कर सकता। वह अपने लाभ के लिए माल और समय ख़र्च करने में कोताही नहीं कर सकता। वह अपनी बुराई नहीं सुन सकता। वह अपनी बेइज़्ज़ती सहन नहीं कर सकता और वह अपने लिए ज़्यादा से ज़्यादा छूट चाहता है। दूसरों के लिए शुभाकांक्षी होने का अर्थ यह है कि आदमी के अन्दर यह गुण पैदा हो जाए

और उसका व्यवहार इस प्रकार का हो जाए कि वह अपने भाई के लिए वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है।

ईमानवाले के चरित्र की इस ख़ूबी को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ईमान की एक अनिवार्य शर्त ठहराया है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"उस सत्ता की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, कोई बन्दा ईमानवाला नहीं होता जब तक कि वह अपने भाई के लिए वही पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है।" (हदीस : बुख़ारी)

भला चाहने में यह बात पहले दर्जे में आती है कि एक इंसान दूसरे इंसान को ग़लत राहों पर भटकने से बचाने की कोशिश करे। उसे हर ऐसे काम से दूर रखने के उपाय अपनाए जिससे उन्हें आख़िरत की ज़िन्दगी में दुख और तकलीफ़ पहुँचने की आशंका हो।

छिपा हुआ शिर्क

"रिया" या दिखावे का रोग ईमान के लिए बड़ा घातक है। यह वह घुन है जो ईमान को अन्दर ही अन्दर खा लेता है और इंसान को शिर्क (दूसरों को अल्लाह का साझी ठहराने) से क़रीब और उसकी नेकियों को बरबाद कर देता है।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के प्यारे रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"आमाल (अल्लाह के निकट स्वाकार्य होने) की निर्भरता नीयत पर है और आदमी को वही कुछ मिलेगा जिसकी उसने नीयत की होगी। जिसने अल्लाह व रसूल (सल्ल०) के लिए हिजरत की होगी उसकी हिजरत सचमुच हिजरत होगी और जिसकी हिजरत दुनिया हासिल करने या किसी औरत से शादी के लिए होगी, उसकी हिजरत दुनिया या औरत के लिए समझी जाएगी।" (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

प्यारे नबी (सल्ल०) के इस कथन का अर्थ यह है कि अच्छे कामों पर सवाब व इनाम की निर्भरता अच्छी नीयत पर है। अगर नीयत ठीक है तो सवाब मिलेगा वरना नहीं मिलेगा। कोई अमल चाहे कितना ही अच्छा और ऊँचा हो अगर उसका प्रेरक अल्लाह की प्रसन्नता के सिवा कुछ और है तो आख़िरत के बाज़ार में उसका कोई मूल्य न होगा। इस तथ्य को आप (सल्ल०) ने हिजरत की मिसाल देकर स्पष्ट किया कि देखो हिजरत यानी सत्य मार्ग में वतन छोड़ना कितना बड़ा नेकी का काम है। लेकिन अगर उसका प्रेरक सही नहीं है और नीयत ख़ुदा की ख़ुशनूदी के सिवा और कुछ है तो आख़िरत में न सिर्फ़ यह कि वह सवाब व इनाम से महरूम (वंचित) रहेगा बल्कि आश्चर्य नहीं कि उलटा उसपर जालसाज़ी और धोखा धड़ी का मुक़दमा क़ायम हो जाए। हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से सुना, आप (सल्ल०) फ़रमाते थे—

"जिसने दिखावे के लिए नमाज़ पढ़ी उसने शिर्क किया, जिसने दिखावे के लिए रोज़ा रखा उसने शिर्क किया और जिसने दिखावे के लिए सदक़ा व ख़ैरात (दान) किया उसने शिर्क किया।" (हदीस : मुसनद अहमद)

इस हदीस में नमाज़, रोज़ा और सदक़ा व ख़ैरात का ज़िक्र केवल उदाहरण के लिए किया गया है वरना इनके अलावा भी जो अच्छे काम लोगों को दिखाने और उनकी नज़रों में मान-सम्मान पाने के लिए या उनसे कोई सांसारिक लाभ प्राप्त करने के लिए किए जाएँगे वह भी एक दर्जे का शिर्क ही होगा। और उनका करनेवाला बजाय इनाम के, ख़ुदा के सख़्त अज़ाब व प्रकोप का पात्र होगा।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने कमरे से निकलकर हमारे पास आए। उस समय हम लोग आपस में दज्जाल मसीह पर चर्चा कर रहे थे। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"क्या मैं तुमको वह चीज़ बताऊँ जो मेरे निकट तुम्हारे लिए दज्जाल से भी ज़्यादा ख़तरनाक है?" हमने निवेदन किया, "प्यारे नबी! ज़रूर बताइए वह क्या चीज़ है?" आपने फ़रमाया, "वह छिपा हुआ शिर्क है (जिसका एक उदाहरण यह है) कि एक आदमी नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हो फिर अपनी नमाज़ को इसलिए लम्बी कर दे कि कोई आदमी उसको नमाज़ पढ़ते देख रहा है।" (हदीस : सुनन इब्ने-माजा)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

"तुम लोग 'जुब्बुल हुज़्न' (दुख के कुएँ या दुख की खाई) से पनाह माँगा करो।"

कुछ सहाबा ने निवेदन किया, "ऐ अल्लाह के रसूल! दुख का कुआँ क्या चीज़ है?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जहन्नम में एक घाटी (या खाई) है (जिसका हाल इतना बुरा है कि) स्वयं जहन्नम रोज़ाना चार सौ बार उससे पनाह माँगती है।"

निवेदन किया गया, "ऐ अल्लाह के रसूल! उसमें कौन लोग जाएँगे?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "वे बड़े इबादत करनेवाले या ज़्यादा क़ुरआन पढ़नेवाले जो दूसरों को दिखाने के लिए अच्छे काम करते हैं।"

(हदीस : तिरमिज़ी)

प्यारे नबी (सल्ल०) के कथन का आशय यह है कि जहन्नम के उस ख़ास कुएँ या खाई में वे लोग झोंके जाएँगे जो देखने में ऊँचे दर्जे के दीनदार, क़ुरआन का पाठ करनेवाले और बहुत ज़्यादा इबादत करनेवाले होंगे। लेकिन हक़ीक़त में उनकी आन्तरिक स्थिति की दृष्टि से उनकी यह दीनदारी और इबादत करना मात्र दिखावा होगा।

हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) जिस समय मुझे यमन का गर्वनर बनाकर भेज रहे थे, मैंने निवेदन किया कि मुझे कुछ नसीहत कीजिए तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अपनी नीयत को हर खोट से पाक रखो, जो काम करो सिर्फ़ ख़ुदा की खुशनूदी के लिए करो तो थोड़ा अमल भी नजात (आख़िरत में कामयाबी) दिलाने के लिए काफ़ी होगा।"

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा गया कि आप उस व्यक्ति के बारे में क्या फ़रमाएँगे जो काई अच्छा काम करता हो और उसकी वजह से लोग उसकी प्रशंसा करते और उससे प्रेम करते हों, तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यह (प्रशंसा और प्रेम) तो मोमिन बन्दे के लिए नक़द ख़ुशख़बरी है।"

(हदीस : मुस्लिम)

रिया (दिखावा) और शोहरत चाहने के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के उपर्युक्त कथनों ने सहाबा किराम (रज़ि०) को इतना डरा दिया था कि उनमें से कुछ को यह सन्देह होने लगा कि जिस अच्छे काम पर दुनिया के लोग काम करनेवाले की तारीफ़ करें, उसकी नेकी की चर्चा हो और लोग उसको अल्लाह का नेक बन्दा समझकर उससे मुहब्बत करने लगें तो शायद वह अमल भी अल्लाह के यहाँ स्वीकार न किया जाएगा। इसलिए कि उस अमल करनेवाले को दुनिया में शोहरत और मुहब्बत की शक्ल में बदला मिल ही गया। इसी के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से यह

सवाल किया गया था जिसके जवाब में आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यह तो मोमिन बन्दे के लिए नक़्द ख़ुशख़बरी है।" जिसका मतलब यह है कि किसी व्यक्ति के अच्छे कामों की शोहरत हो जाना और लोगों का उसकी तारीफ़ या उससे प्रेम करना कोई बुरी बात नहीं है, बल्कि समझना चाहिए कि यह भी अल्लाह तआला ही की तरफ़ से आख़िरत में मिलनेवाले अस्ल इनाम से पहले इस दुनिया में नक़्द बदला और उस बन्दे के नेक कामों को अल्लाह के द्वारा क़बूल किए जाने और पसन्द किए जाने की एक ख़ुशख़बरी और निशानी है।

इसी तरह हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) के साथ एक घटना घटी। वे अपने घर में नमाज़ पढ़ रहे थे। उसी अवस्था में एक व्यक्ति आया और उसने उनको नमाज़ पढ़ते देखा। वे कहते हैं कि मेरे दिल में इस बात से ख़ुशी पैदा हुई कि उस व्यक्ति ने मुझे नमाज़ जैसे अच्छे काम में व्यस्त पाया। उन्होंने इसका ज़िक्र अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से किया (ताकि ख़ुदा न करे अगर यह भी दिखावे का ही कोई रूप हो तो इससे तौबा और अल्लाह से क्षमायाचना की जाए)। आप (सल्ल०) ने उनको इत्मीनान दिलाया कि यह रिया (दिखावा) नहीं है बल्कि तुमको ऐसी स्थिति में तनहाई की नेकी का भी सवाब मिलेगा और सबके सामने की जानेवाली नेकी का भी।

इस हदीस से पता चला कि अच्छे काम निष्ठापूर्वक अल्लाह ही के लिए किए जाएँ, लेकिन अमल करनेवालों के इरादे और कोशिश के बिना अल्लाह के दूसरे बन्दों को इसका पता चल जाए और फिर उनको उससे ख़ुशी हो तो यह इख़्लास (निष्ठा) के विरुद्ध नहीं है।

इसी प्रकार अगर कोई व्यक्ति अच्छा काम इसलिए लोगों के सामने करता है कि वे उसका अनुकरण करें, उससे नेकी की प्रेरणा पाएँ और उसको सीखें तो यह भी रिया (दिखावा) न होगा, बल्कि इस स्थिति में अल्लाह के उस बन्दे को दूसरों को सिखाने और नेकी को फैलाने का भी सवाब मिलेगा।

बातचीत के आदाब

किसी व्यक्ति की बातचीत सुनकर हम उसके ख़यालात व जज़्बात ही का नहीं बल्कि उसकी मानसिक और नैतिक स्थिति का भी अन्दाज़ा लगा सकते हैं। बातचीत को कला का दर्जा दिया गया है। जो लोग यह कला नहीं जानते वे न अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं और न अपने पेशे में पूरी तरह कामयाब हो सकते हैं। अच्छे शिक्षक, अच्छे माँ-बाप, अच्छे दोस्त और अच्छे दुकानदार वही हैं जो अच्छी तरह बातचीत करना जानते हों।

निस्सन्देह दुनिया में बुद्धिमानी की भी क़द्र है, सुन्दरता भी मुँहमाँगी क़ीमत पाती है और दौलत की चमत्कारी शक्तियों से तो किसी को इंकार ही नहीं है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति बातचीत के आदाब नहीं जानता और नर्म, मधुर तथा शालीनतापूर्ण बातचीत नहीं कर सकता तो फिर चाहे वह कितनी ही ख़ूबियोंवाला हो, दिलों पर राज कभी नहीं कर सकता। दिलों को केवल वही व्यक्ति जीत सकता है जिसकी ज़बान अवसर व स्थिति से परिचित हो, जिसकी बातचीत में सामनेवाले का सम्मान हो। वह तारीफ़, शुक्र और प्रोत्साहन की बातें करना और उनके आदाब जानता हो। —ऐसा व्यक्ति वास्तव में जादूगर है, उसके दोस्त उसकी संगत के इच्छुक रहते हैं। उसकी बीवी-बच्चे उसकी वापसी की प्रतीक्षा में रहते हैं। उसके मेहमान उसके दस्तरख़ान पर बैठकर रूह का सुकून हासिल करते हैं और उसके मातहत उसके इशारों पर चलना अपने लिए गौरव की बात समझते हैं। उसकी अनगिनत कठिनाइयाँ केवल उसके शालीन व मीठे बोलों के द्वारा हल हो जाती हैं।

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं—

"अल्लाह के रसूल (सल्ल०) प्रवाह के साथ लगातार बातें नहीं किया करते थे। आप (सल्ल०) इस प्रकार बातें किया करते थे कि अगर कोई गिननेवाला आपके शब्दों को गिनना चाहे तो आसानी से गिन सकता था।"

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात)

प्यारे नबी (सल्ल०) की बातचीत के तरीक़े से यह रौशनी मिलती है कि प्रवाह के साथ उन्मुक्त रूप से निरन्तर बोले चले जाना ख़ूबी और कमाल

नहीं है। बातचीत की ख़ूबी और कमाल यह है कि बातचीत में शालीनता, ठहराव, ज़िम्मेदारी का एहसास और इत्मीनान व संजीदगी हो। अस्ल में आदमी के दिल में जब अल्लाह का डर होता है तो वह इस एहसास के साथ हर शब्द ज़बान से निकालता है कि मेरे ये बोले हुए शब्द वातावरण में विलीन नहीं हो जाते बल्कि सुरक्षित रहते हैं और अल्लाह जब चाहेगा ध्वनि की उन्हीं सुरक्षित तरंगों से फिर मेरी आवाज़ को प्रस्तुत कर देगा। साथ ही भौतिक जीवन में मेरे इन शब्दों का अच्छा या बुरा प्रभाव पड़ता रहेगा और सुननेवाले भी इनसे अच्छा या बुरा असर लेते रहेंगे।

कुछ लोगों को बेकार बातें करने की आदत होती है। ज़्यादा बातें करना शिष्टता व गंभीरता के विरुद्ध है। बातचीत जितनी लम्बी होगी मतलब उतना ही कम होगा। शेक्सपियर का कथन है— "संक्षेप बुद्धिमत्ता की आत्मा है।"

आवश्यकता से अधिक बोलनेवालों को यह भ्रम हो जाता है कि लोग उनकी बातों में रुचि लेते हैं। हालाँकि यह एक प्रकार की शिष्टता होती है कि वे उन्हें टोकना उचित नहीं समझते।

इस सम्बन्ध में एक सैद्धान्तिक निर्देश सदैव सामने रहना चाहिए।

हज़रत सुहैल बिन साअदी का बयान है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"हर काम में शालीनता और इत्मीनान का ध्यान रखना अल्लाह की ओर से है और जल्दबाज़ी करना शैतान की ओर से होता है।"

(हदीस : तिरमिज़ी)

कुछ लोग बातचीत में बेहद तकल्लुफ़ और बनावट से काम लेते हैं। मुँह टेढ़ा करके, शब्दों को चबा-चबाकर मुँह को फुला-फुलाकर और आवाज़ को बना-बनाकर दिखावा करते हुए बातचीत करते हैं। प्यारे नबी (सल्ल०) ने इन बुराइयों से बचने की ताकीद की है और ऐसे लोगों से बेज़ारी ज़ाहिर की है। आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

"क़ियामत के दिन मुझसे बहुत ज़्यादा दूर वे लोग होंगे, जो तुम में से अख़्लाक़ में सबसे बुरे हैं, जिनकी ज़बान क़ैंची की तरह चलती है, जो मुँह फुला-फुलाकर तकल्लुफ़ और बनावट के साथ बातें करते हैं।"

(हदीस : मिश्कात)

सत्य पर मज़बूती से जमना

अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाने के बाद जो ख़ास ज़िम्मेदारियाँ एक मुसलमान पर आ पड़ती हैं उनमें से एक बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि वह हर हाल में दीन (धर्म) पर मज़बूती के साथ क़ायम रहे। चाहे कैसी ही आज़माइशें आएँ, चाहे हालात कितने ही ख़राब हो जाएँ, मोमिन का काम यह है कि वह सत्यमार्ग पर मज़बूती के साथ क़ायम रहे और कभी उसके क़दम न डगमगाने पाएँ। इसी का नाम इस्तिक़ामत है। क़ुरआन मजीद में ऐसे ईमानवालों को ख़ुशख़बरियाँ दी गई हैं, जो सब्र, जमाव व दृढ़ता के साथ ख़ुदा के रास्ते में बराबर आगे बढ़ते रहते हैं और ख़ुदा की मुहब्बत में और उसके दीन (धर्म) के लिए हर प्रकार की क़ुरबानियाँ देते हैं।

क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है—

"जिन लोगों ने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है, फिर उसपर जम गए तो उनपर फ़रिश्ते उतरेंगे कि तुम न तो डरो और न दुखी हो। तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी है जन्नत की जिसका तुमसे वादा किया गया था। हम तुम्हारे दोस्त हैं दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में। और तुम्हारे लिए जन्नत में वह सब-कुछ है जो तुम्हारा जी चाहे और जो कुछ तुम माँगो वह तुमको (यहाँ) मिलेगा। यह मेहमानी है माफ़ करनेवाले और रहम करनेवाले ख़ुदा की ओर से।" (क़ुरआन, 41:30-32)

सुब्हानल्लाह! दीन पर मज़बूती से क़ायम रहनेवालों और ख़ुदा के रास्ते में अपना सब कुछ क़ुरबान करनेवालों के लिए इस आयत में कितनी बड़ी ख़ुशख़बरी दी गई है। सच तो यह है कि अगर जान-माल सब कुछ क़ुरबान करके भी किसी को यह दर्जा मिल जाए तो वह बहुत बड़ा ख़ुशनसीब है।

हज़रत सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह सक़फ़ी (रज़ि०) ने अल्लाह के

रसूल (सल्ल०) से कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! इस्लाम के बारे में मुझे एक ऐसी बात बता दीजिए कि आपके बाद किसी से कुछ पूछने की ज़रूरत न रहे।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कहो कि मैं ख़ुदा पर ईमान लाया और फिर उस पर जम जाओ।" (हदीस : मुस्लिम, नसई, अहमद)

अगर हम सच्चे दिल के साथ अल्लाह पर ईमान लाएँ और यह समझें कि अल्लाह ही इस सारी सृष्टि और सृष्टि की हर चीज़ का मालिक है, वह बादशाहों का बादशाह है और हमारी जान, माल और ज़िन्दगी का मालिक है, वही ख़ुदा है जिसका आदेश सारी दुनिया पर चलता है, जिसके आदेश के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। वह जब तक हमें ज़िन्दा रखना चाहे, हम ज़िन्दा रहेंगे और अगर वह हमें मारना चाहे तो फिर दुनिया की कोई ताक़त हमको बचा नहीं सकती। उसे ख़ुश रखकर हम कामयाब हो सकते हैं और उसे नाराज़ करें तो फिर कोई चीज़ हमें उसके अज़ाब से बचा नहीं सकती। अगर हमारा ईमान ऐसा ही है तो फिर कभी हम ख़ुदा के रास्ते से नहीं फिर सकते, चाहे कितनी मुश्किलें पेश आएँ, ख़ुदा के रास्ते में कितनी ही क़ुरबानियाँ देनी पड़ें, चाहे ख़ुदा के रास्ते में हमें कितना ही सताया जाए, हम बराबर दृढ़ता और मज़बूती के साथ अल्लाह के दीन पर जमे रहेंगे।

अल्लाह और उसका दीन हमें अपनी जान से भी ज़्यादा प्यारा हो। हमारे अन्दर यह तड़प होनी चाहिए कि हम अल्लाह के दीन का बोलबाला करने के लिए अपना समय, अपनी योग्यता, अपनी शक्ति, अपना माल और सारी ज़िन्दगी लगा दें और ख़ुदा के रास्ते में जो कुछ मुशकिलें सामने आएं, सब्र और जमाव के साथ उन्हें बरदाश्त करें, क्योंकि ईमान के दर्जे निरन्तर क़ुरबानी ही से तय होते हैं। यहाँ वह व्यक्ति नहीं पाता है जो अपने लिए सब कुछ समेट कर रखता है, बल्कि वह व्यक्ति पाता है जो अपना सब कुछ लुटा देता है।

सत्य पर जमे रहने का रास्ता बड़ा ही कठिन रास्ता है। इसमें बड़े-बड़े बहादुरों के क़दम डगमगा जाते हैं। इंसान पर जब हर ओर से मुसीबत आ पड़ती है और अल्लाह के फ़ैसले के तहत उसको आज़माया जाता है तो वह घबरा उठता है। वह सत्य को छोड़ना नहीं चाहता लेकिन क़ुरबानी के

जज़्बात उसके अन्दर सर्द पड़ जाते हैं। वह आज़माइशों के बिना अल्लाह की जन्नत में पहुँचना चाहता है। हालाँकि अल्लाह का क़ानून है कि वह आज़माए बिना किसी को उस नेमत भरे घर में दाख़िल नहीं करता।

अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"हम ज़रूर तुमको आज़माएंगे डर व ख़तरे और भूख से, जान-माल के नुक़सान और आमदनियों के घाटे से। इस आज़माइश में जो लोग सब्र करते हैं और जब कोई मुसीबत उन पर आ पड़ती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर हमें पलट कर जाना है, उन्हें ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनपर उनके पालनहार की ओर से बड़ी मेहरबानी होगी। उसकी रहमत उनपर साया करेगी और ऐसे ही लोग सीधे मार्ग पर हैं।"

(क़ुरआन, 2 : 155–157)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा गया—

"किन लोगों की आज़माइश सबसे सख़्त होती है?" आप (सल्ल०) ने जवाब दिया, "नबियों की, फिर उनसे कमतर लोगों की। लोगों को उनके दीन के अनुपात से आज़माया जाता है, जिसका दीन से ताल्लुक़ मज़बूत और सुदृढ़ होगा उसकी आज़माइश सख़्त होगी और जिसकी दीनदारी कमज़ोर होगी उसका इम्तिहान भी कमज़ोर होगा। और आदमी की आज़माइश होती रहती है यहाँ तक कि (उसमें पूरा उतरने के बाद) वह ज़मीन पर चलता है और उसपर कोई गुनाह नहीं रहता।" (हदीस : इब्ने हिब्बान)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"मोमिन नर्म व नाज़ुक मगर मज़बूत पौधे की तरह है जिसे हवा हरकत देती रहती है। कभी इसे गिरा देती है तो कभी खड़ा करती है। यहाँ तक कि वह अपना जीवन पूरा कर लेता है। लेकिन काफ़िर (अधर्मी) की मिसाल उस सख़्त पौधे की-सी है जिसकी जड़ें गहरी नहीं होतीं। हवा का एक ही झोंका उसे उखाड़ फेंकता है।" (हदीस : मुस्लिम)

संसार की इस कर्मभूमि में संघर्षरत धैर्यवान और महासंकल्पी लोगों को क़ियामत के दिन जो इनाम मिलेगा, और जो अज्र व सवाब उन्हें प्रदान

किया जाएगा, वह दूसरी फ़र्ज़ इबादतों को अदा करनेवालों से कहीं ज़्यादा होगा। प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"क़ियामत के दिन जब आज़माइश में पूरे उतरनेवालों को सवाब और इनाम दिया जाएगा, तो सांसारिक जीवन में आराम में रहनेवाले लोग ख़ाहिश करेंगे कि काश (संसार में आज़माइश के तौर पर) उनकी खालें क़ैंचियों से काट दी गई होतीं (तो आज उन्हें भी यह सवाब और इनाम मिल सकता)।"

(हदीस : तिरमिज़ी)

अल्लाह तआला ने इंसानों को चेतावनी दी है कि इम्तिहान और आज़माइश से किसी इंसान को छुटकारा नहीं है। इस चेतावनी का ध्येय यह है कि आदमी अपने ऊपर आनेवाली मुसीबतों और सम्भावित परेशानियों के वक़्त सचेत रहे, होशियार रहे और धरती व आकाश के द्वारा आनेवाली मुसीबतों से घबरा न जाए और हताश व निराश न हो। अल्लाह तआला ने क़ुरआन में फ़रमाया है—

"हम ज़रूर तुम लोगों को आज़माइश में डालेंगे ताकि तुम्हारे हालात की जाँच करें और देख लें कि तुममें मुजाहिद (संघर्ष करनेवाले) और जमे रहनेवाले दृढ़वान कौन हैं।"

(क़ुरआन, 47:31)

वास्तविकता यह है कि ख़ुदा के दीन पर पूर्णरूपेण चलना और दूसरे लोगों को भी उस दीन पर चलने का आह्वान करना बहुत ही मुश्किल काम है। यह बड़ी तंग घाटी है जिसे हर व्यक्ति आसानी से पार नहीं कर सकता। इसपर वही व्यक्ति चल सकता है जो पाँवों के घायल होने और बाँहों के थकने की शिकायत न करे। जो रास्ते की ठोकरों से घबरा कर अपनी राह न छोड़े बल्कि हर ठोकर पर अपने अन्दर नई शक्ति का अनुभव करे। जो विरोधों के तूफ़ान में पीछे न हटे, बल्कि पहाड़ों की तरह अपनी जगह जमा रहे। जो ख़ुदा की मुहब्बत में सब कुछ निछावर कर दे। अपनी शक्तियाँ, ताक़तें, अपना क़ीमती वक़्त, अपना दिलपसन्द माल और सारी ज़िन्दगी को ख़ुदा के दीन का बोलबाला करने के लिए लगा दे। निश्चय ही ऐसे लोग दुनिया व आख़िरत की सफलता प्राप्त करेंगे। उनका पालनहार निश्चय ही उनसे राज़ी व खुश होगा। और ऐसे ही लोगों से कहा जाएगा, "ऐ सन्तुष्ट

आत्मा! अपने पालनहार की ओर चल— तू उससे ख़ुश और वह तुझसे ख़ुश—फिर हमारे बन्दों में शामिल हो और हमारी जन्नत में दाख़िल हो जा।'' ऐसी जन्नत जहाँ हर प्रकार की नेमतें और लज़्ज़तें होंगी। जहाँ हर इच्छा और हर तमन्ना पूरी की जाएगी। जहाँ न कोई दुख होगा, न परेशानी होगी और न बीमारी होगी। जहाँ सलामती की आवाज़ें आएँगी और हर इंसान हमेशा स्वस्थ व जवान रहेगा। जहाँ हमेशा की ज़िन्दगी दी जाएगी, कभी मरना नहीं होगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है—

''तो कोई व्यक्ति भी नहीं जानता कि लोगों के अच्छे कामों के बदले में कैसी-कैसी आँख की ठण्डक उनके लिए छिपी है।''
(क़ुरआन, 32 : 17)

दूसरी जगह फ़रमाया—

''परहेज़गारों के लिए जिस जन्नत का वादा किया जा रहा है, उसकी मिसाल यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही होंगी, उसके फल और उसकी छाया सदाबहार होगी। यह है उन लोगों का अंजाम जो परहेज़गारी करते हैं।'' (क़ुरआन, 13: 35)

''और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनपर दाख़िल होंगे और कहेंगे कि तुमपर सलाम हो इसलिए कि तुम (संसार में अल्लाह के दीन पर) जमकर रहे थे, सो आख़िरत का घर क्या ही अच्छा है।'' (क़ुरआन, 13: 23-24)

एक और जगह फ़रमाया है—

''उनके लिए वहाँ मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे माँगें। पालनहार, कृपाशील की ओर से उन्हें सलाम कहा जाएगा।'' (क़ुरआन, 36 : 57-58)

सुब्हानल्लाह! इससे बड़ी ख़ुशी बन्दे के लिए और क्या हो सकती है कि अल्लाह, सारी दुनिया के पालनहार की ओर से ऐसे लोगों को सलाम कहा जाएगा जो अल्लाह के दीन (इस्लाम) पर मज़बूती के साथ जमे रहकर जीवन व्यतीत करते रहे थे।

विनम्रता

विनम्रता उन नैतिक गुणों में से है, जिनकी क़ुरआन व हदीस में बहुत ताकीद आई है। इंसान ख़ुदा का बन्दा है और बन्दे की ख़ूबी और पूर्णता यही है कि उसके व्यवहार से विनम्रता ज़ाहिर हो और विनम्रता से बन्दगी ही का पता चलता है।

क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"रहमान के ख़ास बन्दे तो वही हैं जो ज़मीन पर विनम्रतापूर्वक चलते हैं।" (क़ुरआन, 25:63)

दूसरी जगह कहा गया—

"आख़िरत के उस घर (जन्नत) का वारिस हम उन्हीं को बनाएँगे, जो नहीं चाहते हैं दुनिया में बड़ा बनना और फ़साद करना।" (क़ुरआन, 28:83)

प्यारे नबी (सल्ल०) फ़रमाते हैं—

"जिसने विनम्रता अपनाई, अल्लाह तआला उसको जन्नत के सबसे ऊँचे दर्जे में जगह देगा।" (हदीस : मिश्कात)

दूसरी हदीस में है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—"अल्लाह तआला ने मेरी तरफ़ वह्य नाज़िल की और हुक्म भेजा कि विनम्रता अपनाऊँ।"

हज़रत हारिसा बिन वहब (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया —

"क्या मैं तुमको बताऊँ कि जन्नती कौन है? हर वह व्यक्ति, जो (व्यवहार और बर्ताव में अक्खड़ और सख़्त न हो बल्कि) विनम्र लोगों और कमज़ोरों का सा व्यवहार करता हो और इसलिए लोग उसको कमज़ोर समझते हों (और अल्लाह के साथ उसका ताल्लुक़ ऐसा हो कि) अगर वह अल्लाह की क़सम खा ले तो अल्लाह उसकी क़सम पूरी कर दे। और क्या

तुमको बता दूँ कि दोज़ख़ी कौन है? हर अक्खड़, बुरी आदतवाला और घमण्डी व्यक्ति।" (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

इस हदीस में जन्नती लोगों का गुण "कमज़ोरी" बताई गई है। इससे अभिप्रेत वह निर्बलता या कमज़ोरी नहीं है जो बल व शक्ति के विलोम के रूप में बोली जाती हैं। बल्कि यहाँ निर्बल या कमज़ोर से अभिप्रेत वह शरीफ़, शिष्ट और विनम्र व्यक्ति है जो व्यवहार और बर्ताव में निर्बलों और कमज़ोरों की तरह दूसरों से दब जाए और इसलिए लोग उसे कमज़ोर समझें और दबा लिया करें। बहरहाल इस हदीस का निष्कर्ष यह निकलता है कि शालीनता, नर्मी और विनम्रता जन्नती लोगों का गुण है और घमण्ड और अक्खड़पन दोज़ख़ी लोगों की पहचान है।

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने एक दिन मिम्बर पर खड़े होकर ख़ुतबे में फ़रमाया, लोगो! विनम्रता अपनाओ, क्योंकि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से सुना है—

"जिसने अल्लाह के लिए (यानी अल्लाह का हुक्म समझकर और उसकी ख़ुशी के लिए) विनम्रता अपनाई और (अल्लाह के बन्दों की तुलना में अपने को ऊँचा करने के बजाए नीचा रखने की कोशिश की) अल्लाह तआला उसको ऊँचा करेगा, जिसका परिणाम यह होगा कि वह अपने विचार और अपनी निगाह में तो छोटा होगा, लेकिन आम लोगों की निगाह में ऊँचा होगा। और जो कोई घमण्ड और बड़ाई की नीति अपनाएगा अल्लाह तआला उसको नीचे गिरा देगा, जिसका परिणाम यह होगा कि वह स्वयं अपनी निगाह में तो बड़ा होगा लेकिन दूसरों की नज़र में वह अपमानित व तुच्छ हो जाएगा।" (हदीस : बैहक़ी, शोबिल ईमान)

सब्र और तक़वा

सब्र के शाब्दिक अर्थ रोकने और बाँधने के हैं और इससे अभिप्रेत इरादे की वह मज़बूती, संकल्प की वह दृढ़ता और मन की इच्छा का वह नियंत्रण है, जिससे एक व्यक्ति इच्छा-प्रेरक तत्त्वों, बाहरी मुशकिलों और मुसीबतों व दुखों की तुलना में अपने दिल व अन्तरात्मा के पसन्द किए हुए रास्ते पर लगातार बढ़ता चला जाए और नेकियों के करने में कोई रुकावट न हो।

सब्र का यह भी अर्थ है कि आदमी अपने जज़्बात और इच्छाओं को क़ाबू में रखे। जल्दबाज़ी, घबराहट, डर, लालच और अनुचित जोश से बचे। ठण्डे दिल और जँची-तुली निर्णय-शक्ति के साथ काम करे। ख़तरे व मुशकिलें सामने हों तो क़दम न लड़खड़ाएँ। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"सब्र से काम लो, निस्सन्देह अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है।" (क़ुरआन, 8: 46)

दूसरी जगह फ़रमाया—

"(ऐ नबी!) कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो, जो ईमान लाए हो अपने पालनहार से डरो। जिन लोगों ने इस दुनिया में भली नीति अपनाई है उनके लिए भलाई है और ख़ुदा की धरती विशाल है। सब्र करनेवालों को तो उनका अज्र (अच्छा बदला) बेहिसाब दिया जाएगा।" (क़ुरआन, 39 : 10)

यानी ईमानवाले केवल ईमान लाकर न रह जाएँ बल्कि अल्लाह का तक़वा भी अपनाएँ। तक़वा यह है कि अल्लाह ने जिन चीज़ों का आदेश दिया उनपर अमल करें, जिन कामों से रोका है, उनसे रुकें और बचें और दुनिया में अल्लाह की पूछगच्छ और पकड़ से डरते हुए काम करें। उनके लिए दुनिया व आख़िरत दोनों लोकों की भलाई होगी और जो लोग नेकी और भलाई के रास्ते पर चलकर हर प्रकार की मुसीबतों व सख़्तियों को बर्दाश्त कर लेंगे और सत्य से न हटेंगे (यानी सब्र करनेवाले) उनको

बेहिसाब इनाम दिया जाएगा।

क़ुरआन में कहा गया—

"हक़ीक़त यह है कि अगर कोई तक़वा और सब्र से काम ले तो अल्लाह के ऐसे नेक बन्दों का अज्र (इनाम) मारा नहीं जाता।"

(क़ुरआन, 12:90)

यानी जिस इंसान पर मुसीबत आए और वह सब्र का दामन हाथ से न छोड़े और तक़वा पर क़ायम रहे तो आख़िरकार अल्लाह तआला उसे बे हिसाब अज्र व इनाम से नवाज़ता है।

अल्लाह तआला का इरशाद है—

"और उनके सब्र के बदले उनको जन्नत (के बाग़) और रेशम (के वस्त्र) प्रदान करेगा।" (क़ुरआन, 76:12)

प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"सब्र की नेमत से बेहतर कोई नेमत नहीं।" और फ़रमाया, "सब्र आधा ईमान है।"

एक दूसरी हदीस में आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

"जिस किसी मुसलमान को कोई दिली तकलीफ़, कोई जिस्मानी बीमारी कोई, दुख और ग़म पहुँचता है और वह उसपर सब्र करता है तो उसके नतीजे में अल्लाह तआला उसकी ग़लतियों को माफ़ करता है, यहाँ तक कि अगर उसे एक काँटा चुभ जाता है तो वह भी उसके गुनाहों की माफ़ी का साधन बनता है।" (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम आदि)

इसी प्रकार एक और हदीस में प्यारे नबी (सल्ल०) फ़रमाते हैं— "मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर समय-समय से आज़माइशें आती रहती हैं। कभी ख़ुद उन पर मुसीबत आती है, कभी औलाद पर आती है और कभी उनका माल तबाह हो जाता है (और वे इन सारी मुसीबतों में सब्र करते हैं और इस प्रकार उनके दिल की सफ़ाई होती रहती है और बुराइयों से दूर होते रहते हैं) यहाँ तक कि जब वे अल्लाह से मिलते हैं तो इस हाल में मिलते हैं कि उनके आमालनामे (कर्मपत्र) में कोई गुनाह नहीं होता।"

(हदीस : तिरमिज़ी)

नेक और भले ईमानवालों की पूरी दुनिया की ज़िन्दगी ही को सब्र की

ज़िन्दगी बताया गया है। होश सँभालने या ईमान लाने के बाद से मरते दम तक किसी व्यक्ति को अपनी नाजाइज़ इच्छाओं को दबाना, अल्लाह की तय की हुई सीमाओं की पाबन्दी करना, अल्लाह के किए हुए फ़र्ज़ों को पूरा करना, अल्लाह की ख़ुशनूदी व रज़ा के लिए अपना वक़्त, अपना माल, अपनी मेहनत, अपनी ताक़तें, अपनी योग्यताएँ यहाँ तक कि ज़रूरत पड़ने पर अपनी जान तक क़ुरबान कर देना, हर लालच और प्रेरित करनेवाली उस चीज़ को ठुकरा देना जो अल्लाह की राह से हटाने के लिए सामने आए, हर उस ख़तरे और तकलीफ़ को बरदाश्त कर लेना जो सत्यमार्ग पर चलने में पेश आए, हर उस फ़ायदे और आनंद से हाथ खींच लेना जो अवैध तरीक़ों से प्राप्त हो, हर उस दुख व नुक़सान और कष्ट को सहन कर लेना जो हक़परस्ती व सत्यपरायणता की वजह से पहुँचे और यह सब कुछ अल्लाह तआला के उस वादे पर भरोसा करते हुए करना कि इस सदाचरण के फल इस दुनिया में नहीं बल्कि मरने के बाद दूसरी ज़िन्दगी में मिलेंगे। यह एक ऐसा तरीक़ा है जो ईमानवालों की पूरी ज़िन्दगी को सब्र की ज़िन्दगी बना देता है। यह हर वक़्त का सब्र है, हमेशा रहनेवाला सब्र है, ज़िन्दगी के हर पहलू पर छाया रहनेवाला सब्र है, और उम्र भर का सब्र है। अल्लाह तआला हम सबको सब्र और तक़वा प्रदान करे। आमीन!

इंसाफ़

क़ुरआन मजीद में सामूहिक जीवन के लिए ऐसे सुनहरे उसूल तय कर दिए गए हैं जिनकी मिसाल किसी दूसरी आसमानी किताब में शायद ही मिल सकें। उन्हीं में से एक 'इंसाफ़' (अद्ल) है। दो चीज़ों में सन्तुलन बनाए रखने का नाम इंसाफ़ है। इंसाफ़ अल्लाह तआला के विशेष गुणों में से एक गुण है और इंसाफ़ का ताल्लुक़ सिर्फ़अदालती कारोबार से नहीं बल्कि ज़िन्दगी के हर क्षेत्र से है। क़ुरआन में अल्लाह तआला का इरशाद है—

"न्याय और इंसाफ़ के ध्वजावाहक और ख़ुदा के गवाह बनकर खड़े हो चाहे उसकी चोट ख़ुद तुम्हारे अपने ऊपर पड़े, चाहे तुम्हारे माँ-बाप और दोस्तों और रिश्तेदारों पर।"

(क़ुरआन, 4 : 135)

इस आयत में अपने और अपने रिश्तेदारों के मामले में इंसाफ़ करने का आदेश दिया जा रहा है। एक ईमानवाले का यही काम है कि वह जीवन के हर मामले में अल्लाह के आदेशों का पालन करे, चाहे उसको कुछ नुक़सान ही क्यों न सहन करना पड़े। दूसरी जगह अल्लाह का आदेश है—

"ख़ुदा के ध्वजावाहक, न्याय व इंसाफ़ के गवाह बनकर खड़े हो और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें न्याय व इंसाफ़ के रास्ते से हटाने न पाए। इंसाफ़ से काम लो। यही परहेज़गारी से ज़्यादा लगती बात है।" (क़ुरआन, 5 : 8)

क़ुरआन में एक अन्य जगह कहा गया —

"हमने अपने रसूलों को खुले प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला उतारी ताकि लोग न्याय व इंसाफ़ पर क़ायम रहें।" (क़ुरआन, 57 : 25)

अल्लाह इंसाफ़ करनेवाला है तथा इंसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है। कारोबारी मामलों में इंसाफ से अभिप्रेत यह है कि नाप-तौल में कमी-बेशी न की जाए। ख़राब माल को शुद्ध व श्रेष्ठ माल के नाम से न बेचा जाए। घरेलू मामलों में इंसाफ़ का तक़ाज़ा यह है कि माँ-बाप सभी बच्चों से

बराबर का सुलूक करें। एक बच्चे को दूसरे पर प्राथमिकता न दें।

हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि०) से रिवायत है, उन्होंने कहा—

"मेरे बाप (बशीर रज़ि०) मुझे लेकर प्यारे नबी (सल्ल०) की सेवा में आए और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! एक ग़ुलाम मेरे पास था, मैंने उसे अपने लड़के को दे दिया। आप (सल्ल०) ने पूछा : "क्या अपने सब लड़कों को दिया है?" उन्होंने कहा, "नहीं।" तब प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उस ग़ुलाम को तू वापस ले ले।" एक दूसरी रिवायत यह है कि "क्या तूने अपने सब लड़कों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया है?" उन्होंने कहा, "नहीं।" तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह से डरो और अपनी औलाद से बराबरी व समानता का व्यवहार करो।" फिर मेरे बाप घर आए और उस ग़ुलाम को वापस ले लिया। एक दूसरी रिवायत में है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तू मुझे गवाह मत बना, मैं ज़ालिम का गवाह न बनूँगा।" एक तीसरी रिवायत में है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम्हें यह बात पसन्द है कि सब लड़के तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करें?" मेरे बाप ने कहा, "हाँ।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "फिर ऐसा मत करो।"
(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

इस हदीस से मालूम हुआ है कि औलाद के साथ बराबरी का सुलूक करना चाहिए। वरना यह अन्याय व अत्याचार होगा। साथ ही यह कि अगर ऐसा किया गया तो उनके दिल आपस में फटेंगे और जिन बच्चों को नहीं दिया गया है उनके दिल में माँ बाप के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा होगी।

अगर किसी आदमी की एक से ज़्यादा बीवियाँ हों तो वह हर एक के भरण-पोषण का भार उठाए और सबके साथ समान व्यवहार करे। लेकिन अगर कोई आदमी उस बीवी की ओर ज़्यादा झुक जाता है जो ख़ूबसूरत और जवान हो, एक बीवी को चाहता है और दूसरी की उपेक्षा करता है, न तो उसका हक़ उसे देता है और न उसके भरण-पोषण का भार उठाता है, ऐसे लोगों के लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने आख़िरत में सख़्त सज़ा मिलने की ख़बर सुनाई है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जब आदमी के पास दो बीवियाँ हों और उसने उनके अधिकारों में इंसाफ़ और बराबरी न रखी तो क़ियामत के दिन वह इस हाल में आएगा कि

उसका आधा धड़ गिर गया होगा।" (हदीस : तिरमिज़ी)

जिनकी दो बीवियाँ हों उन्हें अल्लाह से डरना चाहिए और दोनों के साथ हर मामले में पूरा-पूरा न्याय करना चाहिए, वरना ख़ुदा उन्हें कभी माफ़ न करेगा। और निश्चय ही ऐसे लोग ख़ुदा की पकड़ और अज़ाब से बच न सकेंगे।

हुकूमत की इमारत न्याय व इंसाफ़ की बुनियादों पर खड़ी होनी चाहिए। समाज से अपराध को समाप्त करने का एकमात्र तरीक़ा यह है कि अपराधियों को सज़ा दी जाए, चाहे वे कितने ही प्रभाववाले क्यों न हों। न्याय व इंसाफ़ की रूह यह है कि कोई व्यक्ति क़ानून से ऊपर न समझा जाए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया,

"मेरी उम्मत उस वक़्त तक ख़ुशहाल रहेगी जब तक ये गुण उसके लोगों में बाक़ी रहेंगे—

(1) जब वे बात करें तो सच बोलें।

(2) जब वे लोगों के मामलों का फ़ैसला करें तो इंसाफ़ को हाथ से न जाने दें।

(3) जब उनसे दया की प्रार्थना की जाए तो वे कमज़ोरों पर दया करें।

क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

"अगर फ़ैसला करो तो उनसे इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करना, क्योंकि इंसाफ़ करनेवालों को अल्लाह दोस्त रखता है।"

(क़ुरआन, 5 : 42)

न्याय व इंसाफ़ चूँकि राज्य व प्रशासन के भवन का एक बड़ा और महान स्तम्भ है इसलिए शासक का न्यायप्रिय होना बेहद ज़रूरी है। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"क़ियामत के दिन अल्लाह से सबसे ज़्यादा क़रीब और सबसे ज़्यादा प्रिय 'न्यायप्रिय शासक' होगा और अल्लाह से सबसे ज़्यादा दूर और अज़ाब से घिरा हुआ, क़ियामत के दिन, अन्यायी व अत्याचारी शासक होगा।"

(हदीस : मिश्कात)

और आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"क़ियामत के दिन जब अल्लाह की छांव के सिवा कोई दूसरी छांव

न होगी, सात (प्रकार के) लोगों को अल्लाह अपनी छाया में लेगा। उनमें से एक न्यायप्रिय शासक होगा।"

एक हदीस में है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने एक दिन सहाबा क़िराम से फ़रमाया, "तुम जानते हो कि क़ियामत के दिन अल्लाह की दयालुता की छाँव में कौन लोग सबसे पहले आएँगे?" सहाबा ने कहा, "अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा मालूम है।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ये वे बन्दे होंगे जिनका हाल यह होगा कि जब उनका हक़ उनको दिया जाएगा तो क़बूल कर लेंगे और जब कोई उनसे अपना हक़ माँगेगा तो वे (बिना हीले बहाने किए) उसका हक़ अदा कर देंगे। और वे दूसरे लोगों के लिए बिलकुल उसी प्रकार फ़ैसला करेंगे जिस प्रकार वे ख़ुद अपने लिए करते हैं।"

(हदीस : मिश्कात)

एक हदीस में अल्लाह के प्यारे रसूल (सल्ल०) ने जन्नती लोगों, उनके साथियों और जहन्नमी लोगों और उनके साथियों का ज़िक्र किया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जन्नती तीन प्रकार के होंगे। एक वह सत्ताधारी पुरुष जिसने न्याय व इंसाफ़ से काम लिया, नेकी और सदक़े का चलन आम किया और नर्मी व सहनशीलता को अपना स्वभाव बनाए रखा। दूसरा वह व्यक्ति जो दयालु होगा, हर इंसान के लिए दिल में हमदर्दी रखता होगा। तीसरा वह जिसके बाल-बच्चे हों, फिर भी हराम (निषेध की हुई) चीज़ों से अपना दामन बचाए रखे।"

जहन्नमियों में वह ख़ियानत करनेवाला व्यक्ति भी शामिल होगा जिसका लालच ज़ाहिर न हो, लेकिन वह ख़ियानत का अपराध करता हो। और वह व्यक्ति भी जो सुबह-शाम तेरे माल और बाल-बच्चों के सिलसिले में तुझे धोखा दे। और आप (सल्ल०) ने इसी सन्दर्भ में कंजूसी, झूठ तथा अश्लील शब्द बोलने और बुरा व्यवहार करनेवालों का भी ज़िक्र किया। और आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह ने मुझपर वह्य की है कि तुम लोग विनम्रता से काम लो, यहाँ तक कि कोई किसी पर गर्व न करे, न कोई किसी पर ज़ुल्म करे। (हदीस: मुस्लिम)

मीठे बोल

इंसान के नैतिक जीवन के जिन पहलुओं से उसके साथियों का सबसे ज़्यादा वास्ता पड़ता है और जिनके प्रभाव और परिणाम भी बहुत दूर तक पहुँचनेवाले होते हैं, उनमें से उसकी ज़बान की मिठास या कड़वाहट और नर्मी या सख़्ती भी है। इसी लिए प्यारे नबी (सल्ल०) ने मुसलमानों को मीठा बोलने और अच्छे अन्दाज़ में बात करने की बड़ी ताकीद की, और अपशब्द बोलने या सख़्त स्वर में बात करने से सख़्ती के साथ मना किया। यहाँ तक कि बुरी बात के जवाब में भी बुरी बात कहने को आप (सल्ल०) ने पसन्द नहीं किया।

इंसान बात करे तो अच्छी और भली बात कहे और अपनी ज़बान को सुन्दर और शालीन बातचीत का आदी बनाए। निर्मल और शिष्ट बोल, दोस्तों और दुश्मनों, सबपर प्रभाव डालते हैं।

अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है—

"(और ऐ नबी!) मेरे बन्दों से कह दो कि ज़बान से वही बात निकाला करें जो बेहतरीन हो। अस्ल में यह शैतान है जो इंसानों के बीच बिगाड़ डालने की कोशिश करता है। हक़ीक़त यह है कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।"

(क़ुरआन, 17 : 53)

अगर हम दुश्मनों के साथ नर्म और मीठी बात करेंगे तो उनकी दुश्मनी दोस्ती में बदल जाएगी। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

"और भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम बुराई को उस नेकी से दूर करो जो बेहतरीन हो। तुम देखोगे कि जिसके साथ तुम्हारी दुश्मनी पड़ी हुई थी वह जिगरी दोस्त बन गया है।"

(क़ुरआन, 41 : 34)

हज़रत आइशा (रज़ि०) बयान करती हैं कि कुछ यहूदी लोग अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए और उन्होंने (मन की दुष्टता और शरारत से "अस्सलामु अलैकुम" के बजाए) कहा, "अस्सामु अलैकुम"

(जो अस्ल में अरबी भाषा में एक गाली है और जिसका अर्थ यह है "तुमको मौत आए")। हज़रत आइशा (रज़ि०) ने (उनके इस दुस्साहस को सुन लिया, समझ लिया और) जवाब में फ़रमाया— "तुम्हीं को (मौत) आए और तुमपर अल्लाह की फिटकार और उसका प्रकोप हो।" अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, "ऐ आइशा! ऐसी सख़्ती मुनासिब नहीं, ज़बान को रोको, नर्मी की नीति अपनाओ और सख़्ती व अपशब्द बोलने से अपने को बचाओ।" (हदीस : बुख़ारी)

आप (सल्ल०) ने उन यहूदियों के ऐसे दुस्साहस के जवाब में भी सख़्ती को पसन्द नहीं किया और नर्मी ही अपनाने का निर्देश दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) बयान करते हैं कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मोमिन बन्दा न ज़बान से हमला करनेवाला होता है, न लानत करनेवाला, न अपशब्द बोलनेवाला और न गाली बकनेवाला।" (हदीस : तिरमिज़ी)

यानी मोमिन (ईमानवाले) का यह मक़ाम है और उसका स्वभाव यह होना चाहिए कि उसकी ज़बान से बुरा-भला और गाली-गलोज न निकले।

प्यारे नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, "तुम अपने माल के द्वारा लोगों पर प्रभावी नहीं हो सकते, हाँ खिले चेहरे और अच्छे आचरण से उनके दिलों को जीत सकते हो।" (हदीस : अल-बज़्ज़ार)

क़ुरआन में एक जगह कहा गया है—

"एक मीठा बोल और किसी नागवार बात को ज़रा-सा अनदेखा कर देना उस ख़ैरात से बेहतर है जिसके पीछे दुख हो। अल्लाह निस्पृह है, सहनशीलता उसका गुण है।" (क़ुरआन, 2 : 263)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से मिलने की इजाज़त चाही तो आप (सल्ल०) ने (हम लोगों से) फ़रमाया कि यह अपने क़बीले का बुरा आदमी है। फिर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इसको आने की इजाज़त दे दो। फिर जब वह आ गया तो आप (सल्ल०) ने उसके साथ बहुत नर्मी से बात की। (जब वह चला गया तो) हज़रत आइशा (रज़ि०) ने आप (सल्ल०) से निवेदन

किया, "ऐ अल्लाह के रसूल! आपने तो उस व्यक्ति से बड़ी नर्मी के साथ बात की और पहले आपने उसी के बारे में वह बात कही थी कि वह अपने क़बीले का बहुत बुरा आदमी है।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह के निकट क़ियामत के दिन दर्जे के लिहाज़ से सबसे बुरा आदमी वह होगा जिसकी बुरी और कड़वी-कसैली बातों के डर से लोग उसको छोड़ दें, यानी उससे मिलने और बातचीत करने से बचें।"

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

प्यारे नबी (सल्ल०) की शिक्षा के अनुसार अगर कोई आदमी दुष्ट और बुरा भी हो तब भी उससे नर्मी और शिष्टतापूर्वक ही बात करनी चाहिए वरना कड़वी-कसैली बातों का नतीजा यह होता है कि लोग ऐसे व्यक्ति से मिलने और बात करने से कतराने लगते हैं और जिस व्यक्ति का यह हाल हो वह अल्लाह के निकट बहुत बुरा आदमी है और क़ियामत के दिन उसका बहुत बुरा हाल होगा। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अच्छी और मीठी बात भी एक सदक़ा है यानी भलाई का एक रूप है जिस पर बन्दा इनाम का हक़दार होता है।"
(हदीस : बुख़ारी)

अच्छी बातचीत एक ऐसा गुण है जो नेकियों और बड़ाइयों में गिना जाता है और इसको अपनानेवाला अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी का हक़दार ठहरता है और उसके लिए उसके भाग्य में परलोक की सदा रहनेवाली नेमत लिख दी जाती है।

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसा अमल (काम) सिखा दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर सके।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दीन-दुखियों को खाना खिलाओ, सलाम को आम करो, रात को लोग जब नींद के मज़े ले रहे हों तो तुम नमाज़ें पढ़ो, तो जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे।" (हदीस : अल-बज़्ज़ार)